Choice of Today

Sandesh®

REGD. TRADE MARK

Deluxe

Exercise Book

Name Vivek Sharma

Class XI Subject Grammar

School G S S SOLAN

BPP

BINDAL PAPER PRODUCTS ★

Mfd. By : 3036, BALLIMARAN, DELHI-110 006

Pages Max. Retail Price : Rs. 15.50 (Inclusive of all Taxes)

PART-II

विश्वपः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय। अनुबन्ध	विश्वपा शस्
	लोप करने पर	विश्वपा अस्
यचि भम्	विश्वपा कि भ संज्ञा	
आतो धातोः	आकार लोप	विश्वप् अस्
	संयुक्त करने पर	विश्वपस्
स -सजुषो रुः	सकोरु। अनुबन्धलोपकरने पर	विश्वपर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	विश्वपः इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
	विश्वपा: शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा	

PART-II

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्वौजस्........इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय,	विश्वपा टा
	अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपा आ
यचि भम	विश्वपा की भ संज्ञा	~~विश्वपा आ~~ विश्वपा आ
आतो धातोः	विश्वपा के आकार का लोप	विश्वप् आ
	संयुक्त करने पर	विश्वपा
		इति सिद्धं

विश्वपाभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की इस सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	विश्वपा भ्याम्
	संयुक्त करने पर	विश्वपाभ्याम्
		इति सिद्धं

विश्वपाभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	विश्वपा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	विश्वपाभिस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपाभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	विश्वपाभिः
		इति सिद्धं

विश्वपे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	विश्वपा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस....इत्यादि	सूत्र से ~~तृतीया~~ चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय	विश्वपा ङे
	अनुबन्ध लोप करने पर	विश्वपा ए
यचि भम	विश्वपा की भ संज्ञा	
आतो धातोः	विश्वपा के आकार का लोप	विश्वप् ए

	संयुक्त करने पर	विश्वपे इति सिद्धम्

विश्वपाभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.....इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	विश्वपाभ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपाभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	विश्वपाभ्यः इति सिद्धम्

विश्वपः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.....इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय	विश्वपा ङसि
	अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपा अस्
यचि भम्	विश्वपा की भ संज्ञा	
आतो धातोः	विश्वपा के आकार का लोप	विश्वप् अस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	विश्वपः इति सिद्धम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.....इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय	विश्वपा ङस्
	अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपा अस्
यचि भम्	विश्वपा शब्द की भ संज्ञा	
आतो धातोः	विश्वपा के आकार का लोप	विश्वप् अस्

सूत्र	कार्य	स्थिति
स-सजुषो रुः	स को रुः। अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	विश्वपः इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	विश्वपा ओस्
यचि भम्	विश्वपा कि भ संज्ञा	
आतो धातोः	विश्वपा के आकार का लोप	विश्वप् ओस्
स-सजुषो रुः	स को रु। अनुबन्ध लोप करने पर	विश्वपोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	विश्वपोः इति सिद्धं

विश्वपाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौस ..... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	विश्वपा आम्
यचि भम्	विश्वपा शब्द की भ संज्ञा	
आतो धातोः	भ संज्ञक के आकार का लोप	विश्वप् आम्
	संयुक्त करने पर	विश्वपाम् इति सिद्धं

विश्वपि

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ..... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय	विश्वपा ङि
	अनुबन्धलोप करने पर	विश्वपा इ
यचि भम्	विश्वपा की भ संज्ञा	

आतो धातोः	विश्वपा के आकार का लोप संयुक्त करने पर	विश्वप् इ विश्वपि इति सिद्धि

विश्वपासु

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस..... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय	विश्वपा सुप्
	अनुबन्ध लोप	विश्वपा सु
आदेश प्रत्यययोः	सकार को षकार आदेश	विश्वपाषु इति सिद्धि

हे विश्वपाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	विश्वपा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ---- इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय, सम्बोधन में	
	सु प्रत्यय	हे विश्वपा स
ससजुषो रुः	स को रु।	हे विश्वपा र
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हे विश्वपाः इति सिद्धि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विश्वपाः	विश्वपौ	विश्वपाः
द्वितीया	विश्वपाम्	,,	विश्वपः
तृतीया	विश्वपा	विश्वपाभ्याँ	विश्वपाभिः
चतुर्थी	विश्वपे	,,	विश्वपाभ्यः
पञ्चमी	विश्वपः	,,	,,
षष्ठी	,,	विश्वपोः	विश्वपाम्
सप्तमी	विश्वपि	,,	विश्वपासु
सम्बोधन	हे विश्वपाः	हे विश्वपौ	हे विश्वपाः।

हाहान्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	हाहा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	

स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय अनुबन्ध लोप करने पर	हाहा अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्व सवर्ण दीर्घ एकादेश	हाहास्
तस्माच्छसो नः पुंसि	शस् के सकार को नकार	हाहान् इति सिद्धं

हाहे

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	हाहा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय	हाहा ङे
	अनुबन्ध लोप करने पर	हाहा ए
वृद्धिरेचि	आकार एकार को वृद्धि	हाहै इति सिद्धं

हाहाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हाहा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन ङसि प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप करने पर	हाहा अस्
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ एकादेश	हाहास्
स-सजुषो रुः	स को रु। अनुबन्ध लोप	हाहार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हाहाः

हाहौः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हाहा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	हाहा ओस्
वृद्धिरेचि	आकार-औकार वृद्धि एकादेश	हाहौस्
स-सजुषो रुः	स को रु। अनुबन्ध लोप करने पर	हाहौर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हाहौः इति सिद्धं

हाहाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	हाहा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	हाहा आम्
अकः सवर्णे दीर्घः	आकार दीर्घ एकादेश	हाहाम् इतिसिद्धं

हाहे

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	हाहा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय	हाहा ङि
	अनुबन्ध लोप करने पर	हाहा इ
आद्गुणः	गुण आदेश	हाहे इतिसिद्धं

आकारान्त समाप्त

ह्रस्व इकारान्त

हरिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय।	हरि सु
	अनुबन्धलोप करने पर	हरि स्
स-सजुषो रुः	स को रु। अनुबन्धलोप करने पर	हरि र
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हरिः इतिसिद्धं

हरी

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	हरि औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	हरी इतिसिद्धं

हरयः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	हरिशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	हरि + जस्
जसि च	ह्रस्वान्त अंग को गुण	हरे जस्
	अनुबन्ध लोप करने पर	हरे अस्
एचोऽयवायावः	ए को अय् आदेश	हर् अय् अस्
	संयुक्त करने पर	हरयस्
स-सजुषो रुः	स को रु अनुबन्धलोप करने पर	हरयर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हरयः इति सिद्धं

हरिम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	हरि + अम्
इको यणचि अमि पूर्वः	यण् प्राप्त था, उसे रोक कर पूर्व रूप हुआ	हरिम् इति सिद्ध

हरी

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के द्विवचन में औट् प्रत्यय।	हरि औट्
	अनुबन्ध लोप करने पर	हरि औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	हरी इति सिद्धं

हरीन्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय	हरि शस्

	अनुबन्धलोपकार्य	हरि अस्
इको यणचि	यण प्राप्त था,ङसे रोक्कर	
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्व सवर्ण दीर्घ एकादेश	हरीस्
तस्माच्छसो नः पुंसि	सकार को नकार	हरीन् इति सिद्धं

हरिणा

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ---- इत्यादि	सूत्र से तृतीया के	
	एकवचन में टा प्रत्यय	हरि टा
	~~अनुबन्धलोपकार्य~~	~~हरि आ~~
~~इको यणचि~~	~~यण प्राप्त था ङसे रोक्कर~~	
शेषो घ्यसखि	ह्रस्व इकार घि संज्ञा	
आङो नाऽस्त्रियाम्	आङ् (टा) को ना आदेश	हरि ना
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	ना को णा आदेश	हरिणा इति सिद्धं

हरिभ्यां

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ...... इत्यादि	सूत्र तृतीया के द्विवचन में	
	भ्यां प्रत्यय	हरि भ्यां इति सिद्धं

हरिभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन	
	में भिस् प्रत्यय	हरिभिस्
स-सजुषो रुः	स को रु अनुबन्धलोपकार्य	हरिभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हरिभिः इति सिद्धं

हरये

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	

	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस......इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय	हरि ङे
शेषो घ्यसखि	हरि शब्द की घि संज्ञा	
घेर्ङिति	घि संज्ञक अंग को गुण	हरे ङे
	अनुबन्धलोप करने पर	हरे ए
एचोऽयवायावः	ए को अय् आदेश	हर् अय् ए
	संयुक्त करने पर	हरये इति सिद्धं

हरिभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस......इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	हरि भ्यस्
स-सजुषो रुः	स को रु। अनुबन्धलोप करने पर	हरिभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हरिभ्यः इति सिद्धं

हरेः

	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा।	
स्वौजस......इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन मे ङसि प्रत्यय	हरि ङसि
शेषो घ्यसखि	हरि शब्द की घि संज्ञा	
घेर्ङिति	घि संज्ञक अंग को गुण	हरे ङसि
	अनुबन्धलोप करने पर	हरे अस्
ङसि-ङसोश्च	अस् को पूर्वरूप एकादेश	हरेस्
स-सजुषो रुः	स को रु। अनुबन्धलोप करने पर	हरेः इति सिद्धं

हर्योः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	हरि ओस्

इको यणचि	इकार को यकार आदेश	हर्य् औस्
	संयुक्त करने पर	हर्यौस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	हर्यौर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हर्योः
		इति सिद्धं

हरीणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन	
	में आम् प्रत्यय	हरि आम्
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् आगम	हरि नाम्
नामि	अजन्त अंग को दीर्घ	हरीनाम्
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	न को ण् आदेश	हरीणाम् इति सिद्धं

हरौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से ~~[illegible]~~ सप्तमी के	
	एकवचन में ङि प्रत्यय	हरि ङि
शेषो घ्यसखि	हरि शब्द की घि संज्ञा	
~~[illegible]~~	~~[illegible]~~	~~[illegible]~~
अच्च घेः	इस सूत्र से घिसंज्ञक इकार	
	को अकार और ङि को औत्	
	आदेश हुआ	हर औत्
	अनुबन्धलोप करने पर	हर औ
वृद्धिरेचि	वृद्धि करने पर	हरौ
		इति सिद्धं

हरिषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	हरि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन	
	में सुप् प्रत्यय	हरि सुप्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	अनुबन्धलोप करने पर	हरि सु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार	हरिषु इति सिद्धं

हे हरे

सूत्र	कार्य	स्थिति
		हे हरि सु
एकवचनं सम्बुद्धिः	सु की सम्बुद्धि संज्ञा	
ह्रस्वस्य गुणः	सम्बुद्धि परे रहते गुण प्राप्त	हे हरे सु
एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः	सु का लोप	हे हरे इति सिद्धं

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	"	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्यां	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	"	हरिभ्यः
पञ्चमी	हरेः	"	"
षष्ठी	"	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे	हे हरी	हे हरयः।

सखा

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सखि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा।	
स्वौजस....इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय। अनुबन्धलोप	सखि सु
अनङ् सौ	सखि शब्द के इ को अनङ् आदेश	सखअनङ् सु
	अनुबन्धलोप करने पर	सखअन् सु
अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा	अकार की उपधा संज्ञा	
सर्वनामस्थानेचासम्बुद्धौ	उपधा को दीर्घ	सखान् सु
अपृक्त एकाल् प्रत्ययः	प्रत्यय के सकार की अपृक्त संज्ञा	
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	स् का लोप	सखान्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	पद के अन्त नकार का लोप	सखा इति सिद्धं

सखायौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सखि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	

स्वौजस......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	सखि औ
सख्युरसम्बुद्धौ	औ प्रत्यय को णित्वत् भाव	
अचो ञ्णिति	इकार को वृद्धि करने पर	सखै औ
एचोऽयवायावः	ऐ को आय् आदेश	सख् आय् औ
	संयुक्त करने पर	सखायौ इति सिद्धं

सखायः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सखि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस....इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय अनुबन्धलोप	सखि जस् सखि अस्
सख्युरसम्बुद्धौ	जस् को णित्वत् हुआ	
अचो ञ्णिति	अजन्त अंग को वृद्धि	सखै अस्
एचोऽयवायावः	ऐकार को आय् आदेश	सख् आय् अस्
	संयुक्त करने पर	सखायस्
ससजुषो रुः	स् को रु अनुबन्धलोप	सखायर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सखायः इति सिद्धं

सखायम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सखि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.....इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	सखि अम्
सख्युरसम्बुद्धौ	अम् को णित्वत् भाव	
अचो ञ्णिति	सखि के अजन्त अंग को वृद्धि	सखै अम्
एचोऽयवायावः	ऐ को आय् आदेश	सख् आय् अम्
	संयुक्त करने पर	सखायम् इति सिद्धं

सखीन्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सखि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	

स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के	
	बहुवचन में शस् प्रत्यय	सखि शस्
	अनुबन्धलोप करने पर	सखि + अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	सखीस्
तस्माच्छसो नः पुंसि	सकार को नकार	सखीन् इति सिद्धं
	सख्या	
सूत्र	कार्य	स्थिति
	सखि शब्द की	
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से तृतीया के	
	एकवचन में टा प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	सखि आ
इको यणचि	इकार को यकार आदेश	सख्य् आ
	संयुक्त करने पर	सख्या इति सिद्धं
	सखिभ्याम्	
सूत्र	कार्य	स्थिति
	सखि शब्द की	

अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से तृतीया के	
	द्विवचन में भ्यां प्रत्यय	सखि भ्यां
		इति सिद्धं
	सखिभिः	
सूत्र	कार्य	स्थिति
	सखि शब्द की	
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से तृतीया के	
	बहुवचन में भिस् प्रत्यय	सखिभिस्
स-सजुषो रुः	स को रु, अनुबन्धलोप करने पर	सखिभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सखिभिः
		इति सिद्धं
	सख्ये	
सूत्र	कार्य	स्थिति
	सखि शब्द की	
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्वौजस.........इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय	सखि ङे
	अनुबन्धलोप करने पर	सखि ए
इको यणचि	इ को य् आदेश	सख्य् ए
	संयुक्त करने पर	सख्ये इति सिद्धं

सख्युः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सखि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय	सखि ङसि
	अनुबन्धलोप करने पर	सखि अस्
इको यणचि	इ को य् आदेश	सख्य् अस्
ख्यत्यात् परस्य	अस् के अकार को उकार	सख्य् उस्
	संयुक्त करने पर	सख्युस्
ससजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	सख्युर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सख्युः इति सिद्धं

सखिभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सखि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	सखि भ्यस्
ससजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप करने पर	सखि भ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सखिभ्यः इति सिद्धं

सख्योः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सखि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	सखि ओस्
इको यणचि	इ को य्	सख्योस्
ससजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप करने पर	सख्योर्

खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सख्योः इति सिद्धं

सखिनाम

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सखि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	सखि आम्
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् आगम	सखि नाम्
नामि	इकार को दीर्घ	सखीनाम् इति सिद्धं

सख्योः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सखि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्ययः	सखि ङि
औत्	ङि को औत् आदेश। त् अनुबन्ध का लोप	सखि औ
इकोयणचि	इ को य् आदेश संयुक्त करने पर	सख्य् औ सख्यौ इति सिद्धं

सखिषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सखि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...	इत्यादि सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय	सखि सुप्
	अनुबन्ध लोप करने पर	सखि सु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार	सखिषु इति सिद्धं

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
द्वितीया	सखायम्	,,	सखीन्

तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	"	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	"	"
षष्ठी	"	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	"	सखिषु
सम्बोधन	हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः !

पत्या

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक सञ्ज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन	
	में टा प्रत्यय। अनुबन्धलोप	पति + आ
इको यणचि	इ को य् आदेश	पत्य् + आ
	संयुक्त करने पर	पत्या इति सिद्धं

पत्ये

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन	
	में ङे प्रत्यय	पति ङे
	अनुबन्ध लोप करने पर	पति + ए
इको यणचि	इ को य् करने पर	पत्य् + ए
	संयुक्त करने पर	पत्ये इति सिद्धं

पत्युः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन	
	ङसि प्रत्यय	पति ङसि
	अनुबन्ध लोप करने पर	पति अस्
इको यणचि	इ को य् आदेश	पत्य् अस्
ख्यत्यात् परस्य	अस् के अकार को उकार	पत्युस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	पत्युर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पत्युः
		इति सिद्धं

पत्युः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के एकवचन	
	में ङस् प्रत्यय	पति ङस्
	अनुबन्धलोप करनेपर	पति अस्
इकोयणचि	इ को य् आदेश	पत्य् अस्
ख्यत्यात्परस्य	ङस् के अकार को उकार	पत्युस्
स-सजुषोरुः	सकोरु अनुबन्धलोप करनेपर	पत्युर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पत्युः इति सिद्धि

पत्यौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि सूत्र से	सप्तमी के एकवचन	
	में ङि प्रत्यय	पति ङि
औत्	ङि को औत् आदेश	
	~~अनुबन्धलोप करनेपर~~	~~पति~~
	अनुबन्धलोप करनेपर	पति औ
इकोयणचि	इ को य् आदेश	पत्य् औ
	संयुक्त करने पर	पत्यौ इति सिद्धि

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	"	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	"	"
षष्ठी	"	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	"	पतिषु
सम्बोधन	हे पते	हे पती	हे पतयः।

कति

सूत्र	कार्य	स्थिति
	कति शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के	
	बहुवचन में जस् प्रत्यय	कति जस
बहुगण-वतु-डति संख्या	कति शब्द की संख्यसंज्ञा	
डति च	कति शब्द की षट्संज्ञा	
षड्भ्यो लुक्	जस लोप प्राप्त	कति
प्रत्ययस्य-लुक्-श्लु-लुपः	जस लोप की लुक् संज्ञा	
प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्	जस के लोप होने पर भी	
	तदाश्रित कार्य (गुण) था होना	
न लुमताऽङ्गस्य	इस सूत्र से उसका	
	निषेध हुआ	कति इति सिद्धं
	कति	
सूत्र	कार्य	स्थिति
	कति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्..... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के	
	बहुवचन में शस् प्रत्यय	कति शस

बहु-गण-वतु डति संख्या	कति शब्द की संख्या संज्ञा	
डति च	संख्यावाचक कति शब्द की	
	षट्संज्ञा	
षड्भ्यो लुक्	शस् का लुक् (लोप)	कति
		इति सिद्धं
	कति भिः	
सूत्र	कार्य	स्थिति
	कति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.....इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में	
	भिस् प्रत्यय	कति भिस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप करने पर	कति भिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	कतिभिः
		इति सिद्धं
	कतिभ्यः	
सूत्र	कार्य	स्थिति
	कति शब्द कि	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	कति भ्यस्
ससजुषो रुः	स् को रु अनुबन्धलोप	कति भ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	कतिभ्यः
		इति सिद्धं

कतीनाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	कति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	कति आम
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम को नुट् आगम	कति नाम
नामि	अजन्त अंग को दीर्घ	कतीनाम्
		इति सिद्धं

कतिषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	कति शब्द की [illegible]	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय।	कति + सुप्
	अनुबन्धलोप करने पर	कति + सु
आदेश प्रत्यययोः	सकार को षकार	कतिषु
		इति सिद्धं
	कति शब्द के रूप केवल बहुवचन में	

	बहुवचन
प्रथमा	कति
द्वितीया	कति
तृतीया	कतिभिः
चतुर्थी	कतिभ्यः
पञ्चमी	कतिभ्यः
षष्ठी	कतीनाम
सप्तमी	कतिषु

त्रयः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	त्रि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	त्रि जस्
जसि च	त्रि शब्द को गुण	त्रे जस्
	जस् अनुबन्धलोप करने पर	त्रे अस्
एचोऽयवायावः	ए को अय् आदेश	त्र् अय् अस्
	संयुक्त करने पर	त्रयस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	त्रयर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	त्रयः
		इति सिद्धं

त्रीन्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	त्रि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय	त्रि शस्
	अनुबन्धलोप करने पर	त्रि अस्
इको यणचि	इ को य् आदेश प्राप्त था उसे रोक कर	
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्व सवर्ण दीर्घ एकादेश	~~त्रि अस्~~ त्रीस्
तस्माच्छसो नः पुंसि	सकार को नकार	त्रीन्
		इति सिद्धं

त्रिभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	त्रि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	त्रि भिस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	त्रिभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	त्रिभिः
		इति सिद्धं

त्रिभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	त्रि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के	
	बहुवचन में भ्यस्	त्रि + भ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	त्रिभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	त्रिभ्यः इति सिद्धं

त्रयाणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	त्रिशब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस..... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के	
	बहुवचन में आम् प्रत्यय	त्रि आम्
इको यणचि	इ को य् आदेश प्राप्त था	
	उसे रोककर	
त्रेस्त्रयः	त्रि शब्द को त्रय आदेश	त्रय आम्
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् आगम	त्रय नाम्
नामि	अजन्त अंग को दीर्घ	त्रयानाम्
अट्-कु-प्वाङ्-नुम्-व्यवायेऽपि	न् को ण् आदेश	त्रयाणाम् इति सिद्धं

त्रिषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	त्रि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस..... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के	
	बहुवचन में सुप् प्रत्यय	त्रि सुप्
	अनुबन्ध लोप करने पर	त्रि सु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार	त्रिषु इति सिद्धं

त्रि शब्द के रूप केवल बहुवचन में होंगे

	बहुवचन		बहुवचन
प्रथमा	त्रयः	पञ्चमी	त्रिभ्यः
द्वितीया	त्रीन्	षष्ठी	त्रयाणाम्
तृतीया	त्रिभिः	सप्तमी	त्रिषु
चतुर्थी	त्रिभ्यः		

4

द्वौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	द्वि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा	
स्वौजस......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	द्वि औ
इको यणचि	यण् प्राप्त था। उसे रोककर	
त्यदादीनामः	द्वि को अकारन्तादेश	द्व औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था	
नादिचि	इस सूत्र से उसका निषेध	
वृद्धिरेचि	अकार-औकार को वृद्धि औकार करने पर	द्वौ इति सिद्धं

द्वाभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	द्वि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा	
स्वौजस......इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	द्वि भ्याम्
त्यदादीनामः	द्वि को अकारअन्तादेश	द्व भ्याम्
सुपि च	अदन्त अंग को दीर्घ करने पर	द्वाभ्याम् इति सिद्धं

5

द्वयोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	द्वि शब्द की प्रातिपदिक सञ्ज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	द्वि ओस्
इको यणचि	यण् प्राप्त था। उसे रोककर	
त्यदादीनामः	द्वि शब्द को अकारन्तादेश	द्व ओस्
ओसि च	अदन्त अंग को एकारआदेश	द्वे ओस्
एचोऽयवायावः	ए को अय् आदेश संयुक्त करने पर	द्वय् ओस् द्वयोस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	द्वयोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	द्वयोः इति सिद्धं

द्वि शब्द नित्य द्विवचनान्त है, अतः

	द्विवचन		द्विवचन
प्रथमा	द्वौ	पञ्चमी	द्वाभ्याम्
द्वितीया	द्वौ	षष्ठी	द्वयोः
तृतीया	द्वाभ्याम्	सप्तमी	द्वयोः
चतुर्थी	द्वाभ्याम्		

ह्रस्व इकारान्त समाप्त

दीर्घ ईकारान्त प्रारम्भ

पपीः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	पपी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एक-वचन में सु प्रत्यय	पपी सु
	अनुबन्ध लोप करने पर	पपी स
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	पपी र्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग -पप्यौ	पपीः इतिसिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन औ प्रत्यय	पपी औ
इको यणचि	ई को य् आदेश	पप्य् औ
	संयुक्त करने पर	पप्यौ इतिसिद्धं

पप्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	पपी अस्
इको यणचि	ई को य् आदेश	पप्य्अस्
	संयुक्त करने पर	पप्यस्

स-सजुषो रुः	सकार को रु, अनुबन्धलोप	पप्यर्
खरवसानयोः	रेफ को विसर्ग	पप्यः
		इति सिद्धं

पपीम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ......इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एक-वचन में अम् प्रत्यय	पपी अम्
इको यणचि	यण् प्राप्त था, उसे रोककर	
अमि पूर्वः	पूर्वरूप एकादेश	पपीम्
		इति सिद्धं

पप्यौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ......इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के द्विवचन में औट् प्रत्यय, अनुबन्धलोप करने पर	पपी औ
~~दीर्घात् जसि च~~ प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश प्राप्त था ~~[illegible]~~	
दीर्घाज्जसि च	इस सूत्र से निषेध हुआ	
इको यणचि	इ को य् आदेश	पप्य् औ
	संयुक्त करने पर	पप्यौ
		इति सिद्धं

पपीन्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ......इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय	पपी शस्
	अनुबन्धलोप करने पर	पपी अस्
इको यणचि	यण् प्राप्त था, उसे रोककर	
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	पपीस्

तस्माच्छसो नः पुंसि	शस् के सकार को नकार	पपीन् इतिसिद्धं

पप्या

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.........इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन	
	में टा प्रत्यय	पपी टा
	अनुबन्धलोप करने पर	पपी आ
इको यणचि	इ को य् आदेश	पप्य् आ
	संयुक्त करने पर	पप्या इतिसिद्धं

पपीभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से तृतीया के	
	द्विवचन में भ्यां प्रत्यय	पपी भ्यां
		इतिसिद्धं

पपीभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.........इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन	
	में भिस् प्रत्यय	पपीभिस्
ससजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप करने पर	पपीभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पपीभिः
		इति सिद्धं

पप्ये

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	पपी शब्द की	
	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.....इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के	
	एकवचन में ङे प्रत्यय	पपी ङे
	अनुबन्धलोप करने पर	पपी ए
इको यणचि	इ को य् आदेश	पप्य् ए
	संयुक्त करने पर	पप्ये इतिसिद्धं

पपीभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के	
	बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	पपी भ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु अनुबन्ध लोप	पपीभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पपीभ्यः
		इति सिद्धं

पप्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के	
	एकवचन ङसि प्रत्यय	पपी ङसि
	अनुबन्ध लोप करने पर	पपी अस्
इको यणचि	ई को य् आदेश	पप्य् अस्
	संयुक्त करने पर	पप्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु अनुबन्ध लोप	पप्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पप्यः
		इतिसिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के एकवचन में	
	ङस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	पपी अस्
इको यणचि	ई को य् आदेश	पप्य् अस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोपकरने पर	पप्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पप्यः इतिसिद्धं

पप्योः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्वौजस्.........इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	पपी ओस्
इको यणचि	इ को य् आदेश	पप्य् ओस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	पप्योर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पप्योः
		इतिसिद्धः

पप्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के आम् प्रत्यय	पपी + आम्
इको यणचि	इ को य् आदेश	पप्य् आम्
	संयुक्त करने पर	पप्याम् इतिसिद्धः

पपी

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय, अनुबन्धलोप	पपी इ
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ ईकार एकादेश	पपी इतिसिद्धः

पपीषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पपी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय	पपी सुप्
	अनुबन्ध लोप करने पर	पपीसु
~~आदेशप्रत्यययोः~~	~~सकार को षकार आदेश~~	~~पपीषु इतिसिद्धः~~

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पपीः	पप्यौ	पप्यः
द्वितीया	पपीम्	"	पपीन्
तृतीया	पप्या	पपीभ्याम्	पपीभिः
चतुर्थी	पप्ये	"	पपीभ्यः

पञ्चमी	पप्यः	पपीभ्याँ	पपीभ्यः
षष्ठी	,,	पप्योः	पप्याँ
सप्तमी	पपी	,,	पपीषु
सम्बोधन	हे पपीः	हे पप्यौ	हे पप्यः!

सूत्र	कार्य	स्थिति
	बहुश्रेयसी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप करने पर	बहुश्रेयसी स
अपृक्त एकाल् प्रत्ययः	सकार की अपृक्त संज्ञा	
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्	अपृक्त संज्ञक का लोप	बहुश्रेयसी इति सिद्धं

बहुश्रेयस्यौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	बहुश्रेयसी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	बहुश्रेयसी औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्णदीर्घ एकादेश था	
दीर्घाज्जसि च	इस सूत्र से उसका निषेध	बहुश्रेयसी औ
इको यणचि	ईकार को य् आदेश	बहुश्रेयस्य् औ
	संयुक्त करने पर	बहुश्रेयस्यौ इति सिद्धं

बहुश्रेयस्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	बहुश्रेयसी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	बहुश्रेयसीजस्
	अनुबन्ध लोप करने पर	बहुश्रेयसी अस्

प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्णदीर्घ एकादेश	
दीर्घाज्जसि च	था, इस सूत्र से उसका निषेध हुआ	बहुश्रेयसीअस्
इको यणचि	ई को य् आदेश करके संयुक्त करने पर	बहुश्रेयस्यअस् / बहुश्रेयस्यस्
स-सजुषो रुः	सकोरु, अनुबन्धलोप	बहुश्रेयस्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	बहुश्रेयस्यः
		इति सिद्धं

बहुश्रेयसीम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	बहुश्रेयसीअम्
इको यणचि	यण प्राप्त था, उसे बाधकर	
अमि पूर्वः	पूर्वरूप एकादेश	बहुश्रेयसीम्
		इति सिद्धं

बहुश्रेयस्यौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ... इत्यादि	सूत्र द्वितीया के द्विवचन में औट् प्रत्यय	बहुश्रेयसी औट्
	अनुबन्धलोप करने पर	बहुश्रेयसी औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	
दीर्घाज्जसि च	इस सूत्र से उसका निषेध	बहुश्रेयसी औ
इको यणचि	ई को य् आदेश	बहुश्रेयस्य् औ
	संयुक्त करने पर	बहुश्रेयस्यौ
		इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन	

सूत्र	कार्य	स्थिति
	में शस् प्रत्यय	बहुश्रेयसी शस्
	अनुबन्धलोप करने पर	बहुश्रेयसी अस्
इको यणचि प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	यण प्राप्त था: रोककर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	बहुश्रेयसीस्
तस्माच्छसो नः पुंसि	शस् के सकार को नकार	बहुश्रेयसीन् इति सिद्धं

बहुश्रेयस्या

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	बहुश्रेयसी आ
इको यणचि	ई को य् आदेश	बहुश्रेयस्या इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्यां प्रत्यय	बहुश्रेयसीभ्यां इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	बहुश्रेयसीभिस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	बहुश्रेयसीभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	बहुश्रेयसीभिः इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	

स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय	बहुश्रेयसी ङे
यू स्त्र्याख्यौ नदी	बहुश्रेयसी शब्द की नदी संज्ञा	
आण्नद्याः	ङे को आट् आगम	बहुश्रेयसी आट् ङे
	अनुबन्धलोप करने पर	बहुश्रेयसी आ ए
आटश्च	आ ए को वृद्धि एकादेश	बहुश्रेयसी ऐ
इको यणचि	ई को य् आदेश	बहुश्रेयस्य् ऐ
	संयुक्त करने पर	बहुश्रेयस्यै इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	बहुश्रेयसी भ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	बहुश्रेयसीभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	बहुश्रेयसीभ्यः इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय	बहुश्रेयसी ङसि
यू स्त्र्याख्यौ नदी	बहुश्रेयसी शब्द की नदी संज्ञा	
आण्नद्याः	ङसि को आट् का आगम	बहुश्रेयसी आट् ङसि
	अनुबन्धलोप करने पर	बहुश्रेयसी आ अस्
आटश्च	आकार-अकार को वृद्धि एकादेश	बहुश्रेयसी आस्
इको यणचि	ई को य्	बहुश्रेयस्यास्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	~~इति सिद्धं~~ बहुश्रेयस्यार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	बहुश्रेयस्याः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	बहुश्रेयसी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययःप्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्- ----इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के एकवचन में ङस् प्रत्यय	बहुश्रेयसी ङस्
	अनुबन्धलोप करने पर	बहुश्रेयसी अस्
आण्नद्याः	अस् को आट् का आगम	
	अनुबन्धलोप करने पर	बहुश्रेयसी आ अस्
आटश्च	आकार-अकार को आकारवृद्धि एकादेश	बहुश्रेयसी आस्
इको यणचि	ई को य् आदेश	बहुश्रेयस्यास्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	बहुश्रेयस्यार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	बहुश्रेयस्याः इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
	बहुश्रेयसी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययःप्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्- ----इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	बहुश्रेयसी ओस्
इको यणचि	ई को य् आदेश	बहुश्रेयस्य् ओस्
ससजुषो रुः	स को रु, अनुबन्धलोप	बहुश्रेयस्योर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	बहुश्रेयस्योः इति सिद्धं

सूत्र	कार्य	स्थिति
	बहुश्रेयसी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	बहुश्रेयसी आम्
~~इको यणचि~~	~~ई को य् आदेश~~	~~बहुश्रेयस्य् आम्~~ ~~बहुश्रेयस्याम्~~ इति सिद्धं

यू स्त्र्याख्यौ नदी	बहुश्रेयसी शब्द की नदी संज्ञा	
ह्रस्वनद्यापो नुट्	~~[struck]~~ आम् को नुट् आगम	बहुश्रेयसीनाम् इति सिद्ध

बहुश्रेयस्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय	बहुश्रेयसी ङि
यू स्त्र्याख्यौ नदी	बहुश्रेयसी शब्द की नदी संज्ञा	
ङेराम्नद्याम्नीभ्यः	ङि के स्थान पर आम् आदेश	बहुश्रेयसी आम्
इको यणचि	~~[struck]~~ करने पर ई कार्य	बहुश्रेयस्याम् इति सिद्ध

सूत्र	कार्य	स्थिति
	बहुश्रेयसी शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय	बहुश्रेयसी सुप्
	अनुबन्ध लोप करने पर सु	बहुश्रेयसी सु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार	बहुश्रेयसीषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	बहुश्रेयसी शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
~~स्वौजस् ...... इत्यादि~~	~~[struck]~~ सम्बोधन के एकवचन में सु प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप करने पर	बहुश्रेयसी स्
~~[struck]~~ यू स्त्र्याख्यौ नदी	बहुश्रेयसी कि नदी संज्ञा	
अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः	दीर्घ ईकार को ह्रस्व इकार	बहुश्रेयसि स्
एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः	सु के सकार का लोप	बहुश्रेयसि इति सिद्ध

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बहुश्रेयसी	बहुश्रेयस्यौ	बहुश्रेयस्यः
द्वितीया	बहुश्रेयसीम्	बहुश्रेयस्यौ	बहुश्रेयसीन्
तृतीया	बहुश्रेयस्या	बहुश्रेयसीभ्यां	बहुश्रेयसीभिः
चतुर्थी	बहुश्रेयस्यै	,,	बहुश्रेयसीभ्यः
पञ्चमी	बहुश्रेयस्याः	,,	,,
षष्ठी	,,		
सप्तमी	बहुश्रेयस्यां		
सम्बोधन	हे बहुश्रेयसि	हे बहुश्रेयस्यौ	हे बहुश्रेयस्यः

प्रथीः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	प्रथी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक ...	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा एकवचन में सु प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	प्रथी स
ससजुषो रुः	स को रु । अनुबन्धलोप	प्रथीर

~~अप्रत्यायरसर्जनीयः~~ ~~रेफ को विसर्ग~~ | प्रथीः इति सिद्धः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बहुश्रेयसी	बहुश्रेयस्यौ	बहुश्रेयस्यः
द्वितीया	बहुश्रेयसीम्	,,	बहुश्रेयसीन्
तृतीया	बहुश्रेयस्या	बहुश्रेयसीभ्याम्	बहुश्रेयसीभिः
चतुर्थी	बहुश्रेयस्यै	,,	बहुश्रेयसीभ्यः
पञ्चमी	बहुश्रेयस्याः	,,	,,
षष्ठी	,,	बहुश्रेयस्योः	बहुश्रेयसीनाम्
सप्तमी	बहुश्रेयस्यां	,,	बहुश्रेयसीषु
सम्बोधन	हे बहुश्रेयसि	हे बहुश्रेयस्यौ	हे बहुश्रेयस्यः

क्रोष्टा

सूत्र	कार्य	स्थिति
	क्रोष्टु शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...	इत्यादि सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	क्रोष्टु स

X

तृज्वत् क्रोष्टुः	क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	गुण प्राप्त था। उसे रोक कर	
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च	अनङ् आदेश अनुबन्ध लोप	क्रोष्टृ अन स
अप्तृन् ... आदि	सूत्र से उपधा को दीर्घ आदेश	क्रोष्टान स
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सु का लोप	क्रोष्टान्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	नकार का लोप क्रोष्टारौ	क्रोष्टा इति सिद्धे
सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् स्वौजस ..... इत्यादि	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	क्रोष्टु औ

X

तृज्वत् क्रोष्टुः	क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ औ
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	गुण प्राप्त था उसे रोक कर	
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च	अनङ् आदेश। अनुबन्ध लोप करने पर	क्रोष्टृ अन् औ क्रोष्ट

क्रोष्टा

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
तृज्वत् क्रोष्टुः	क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ सु
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	क्रोष्टृ सु
तृज्वत् क्रोष्टुः	क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	गुण प्राप्त था, इसको बाधकर	
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च	अनङ् आदेश	
	अनुबन्धलोप करने पर	क्रोष्टन् सु
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सु का लोप	क्रोष्टन्
अप्तृन्तृच्.... इत्यादि	सूत्र से उपधा को दीर्घ	क्रोष्टान्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	नकार का लोप	क्रोष्टा इति सिद्धं

क्रोष्टारौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
तृज्वत् क्रोष्टुः	क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	क्रोष्टु औ
तृज्वत् क्रोष्टुः	क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ औ
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	ऋदन्त को गुण	क्रोष्टर् औ
अप्तृन्.... इत्यादि	सूत्र से उपधा को दीर्घ	क्रोष्टारौ इति सिद्धं

क्रोष्टारः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	

	अनुबन्धलोप करने पर	क्रोष्टु अस्
तृज्वत् क्रोष्टुः	क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ अस्
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	गुण करने पर	क्रोष्टर् अस्
अप्तृन् ... इत्यादि	सूत्र से उपधा को दीर्घ	क्रोष्टार् अस्
	संयुक्त करने पर	क्रोष्टारस्
ससजुषो रुः	स् को रु । अनुबन्ध लोप	क्रोष्टारर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	क्रोष्टारः इति सिद्धं

क्रोष्टारम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	क्रोष्टु अम्
तृज्वत् क्रोष्टुः	क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ अम्
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	ऋदन्त अङ्ग को गुण	क्रोष्टर् अम्
अप्तृन् तृच् ... इत्यादि	सूत्र से उपधा को दीर्घ	क्रोष्टार् अम्

	संयुक्त करने पर	क्रोष्टारमिति सिद्धं

क्रोष्टून्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	क्रोष्टु अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्व सवर्ण दीर्घ एकादेश	क्रोष्टूस्
तस्माच्छसो नः पुंसि	सकार को नकार	क्रोष्टून् इति सिद्धं

क्रोष्ट्रा = क्रोष्टुना

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय।	
	अनुबन्ध लोप करने पर	क्रोष्टु आ

विभाषा तृतीयादिष्वचि	विकल्प से क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ आ
इको यणचि	ऋकार को रेफादेश संयुक्त करने पर	क्रोष्ट्र् आ क्रोष्ट्रा इति सिद्धं
	अभाव पक्ष में	क्रोष्टु आ
इको यणचि शेषो घ्यसखि आङो नाऽस्त्रियाम्	यण् प्राप्त था उसे रोककर क्रोष्टु शब्द की घि संज्ञा टा (आ) को ना आदेश	क्रोष्टुना इति रूपं

क्रोष्टुभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं स्वौजस..... इत्यादि	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय संयुक्त करने पर	क्रोष्टु+भ्याम् क्रोष्टुभ्याम् इति सिद्धं

क्रोष्टुभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं स्वौजस..... इत्यादि	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा। सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	क्रोष्टु+भिस्
ससजुषो रुः खरवसानयोर्विसर्जनीयः	स को रु, अनुबन्ध लोप रेफ को विसर्ग	क्रोष्टुभिर् क्रोष्टुभिः इति सिद्धं

क्रोष्ट्रे = क्रोष्टवे

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं स्वौजस..... इत्यादि	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय अनुबन्ध लोप करने पर	क्रोष्टु ए
विभाषा तृतीयादिष्वचि	विकल्प से क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ ए
इको यणचि	ऋकार को रेफादेश	क्रोष्ट्र् ए

सूत्र	कार्य	स्थिति
	संयुक्त करने पर	क्रोष्टृ इति सिद्ध
	अभाव पक्ष में	क्रोष्टु ए
इको यणचि	यण प्राप्त था, उसे रोककर	
शेषोऽध्यसखि	क्रोष्टु शब्द की घि संज्ञा	
घेर्ङिति	घिसंज्ञक को गुणादेश हुआ	क्रोष्टो ए
एचोऽयवायावः	ओकार को अवादेश	क्रोष्टव् ए
	संयुक्त करने पर	क्रोष्टवे
		इति सिद्ध

क्रोष्टु = क्रोष्टोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	क्रोष्टु शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्..... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के	
	एकवचन में ङसि प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप करने पर	क्रोष्टु अस्
विभाषा तृतीयादिष्वचि	विकल्प से तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ अस्
इको यणचि	यण प्राप्त था	

सूत्र	कार्य	स्थिति
ऋत उत्	उसे रोक कर उकार एकादेश इस सूत्र की सहायता से ~~...~~ उर् के रूप में हुआ	
~~ऋत उत्~~ रात् सस्य	~~उकार एकादेश करने पर~~ सकार का लोप	~~क्रोष्टुर् स्~~ क्रोष्टुर्
~~ससजुषो रुः~~	~~स को रु। अनुबन्ध लोप करने पर~~	क्रोष्टुर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग। क्रोष्टुः	इति सिद्ध
	अभाव पक्ष में	क्रोष्टु अस्
इको यणचि	यण् प्राप्त था। उसे रोक कर	
शेषो घ्यसखि	क्रोष्टु की घि संज्ञा	
घेर्ङिति	घिसंज्ञक को गुणादेश	क्रोष्टो अस्
एचोऽयवायावः	ओकार को अवादेश	~~क्रोष्टव् अस्~~
	संयुक्त करने पर	~~क्रोष्टवस्~~
ङसिङसोश्च	पूर्वरूप एकादेश	क्रोष्टो स्
ससजुषो रुः	स को रु। अनुबन्ध लोप	क्रोष्टोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	क्रोष्टोः
		इति सिद्ध

क्रोष्टुभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	क्रोष्टु शब्द की	

अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	क्रोष्टु+भ्यस्
	संयुक्त करने पर	क्रोष्टुभ्यस्
स-सजुषोरुः	स को रु। अनुबन्ध लोप	क्रोष्टुभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	क्रोष्टुभ्यः इति सिद्धं

क्रोष्ट्रोः = क्रोष्ट्वोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययःप्रातिपदिकं	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस..... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	क्रोष्टु ओस्
विभाषा तृतीयादिष्वचि	विकल्प से तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ ओस्
इको यणचि	ऋकार को रेफादेश	क्रोष्ट्र् ओस्
	संयुक्त करने पर	क्रोष्ट्रोस्
स-सजुषोरुः	सको रु। अनुबन्धलोप	क्रोष्ट्रोरु
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	क्रोष्ट्रोः इति सिद्धं
	अभाव पक्ष में	क्रोष्टु ओस्
इको यणचि	उकार को वकार आदेश	क्रोष्ट्व् ओस्
	संयुक्त करने पर	क्रोष्ट्वोस्
स-सजुषोरुः	स को रु। अनुबन्धलोप	क्रोष्ट्वोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	क्रोष्ट्वोः इति सिद्धं रूपम्

क्रोष्टूनाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययःप्रातिपदिकं	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के बहुवचन में आम् प्रत्यय	क्रोष्टु आम्
विभाषा तृतीयादिष्वचि	तृज्वद्भाव प्राप्त था। उसे रोककर।	
नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्वविप्रतिषेधेन	क्रोष्टु को नुट् ~~अनुबन्धलोप~~ इस वार्तिक की सहायता से	[illegible]

ह्रस्वनद्यापो नुट् नामि	~~कुट्~~ आम् को नुट् आगम दीर्घ करने पर	क्रोष्टु नाम्, क्रोष्टूनाम् इति सिद्धं

क्रोष्टरि = क्रोष्टौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय अनुबन्ध लोप करने पर	क्रोष्टु इ
तृज्वत्क्रोष्टुः	विकल्प से क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ इ
इको यणचि	यण प्राप्त था उसे रोककर गुण आदेश।	क्रोष्टर् इ
ऋतो ङि-सर्वनामस्थानयोः	संयुक्त करने पर	क्रोष्टरि इति सिद्धं
	अभाव पक्ष में घि संज्ञा	क्रोष्टु ङि
शेषो घ्यसखि		
घेर्ङिति	घिसंज्ञक को गुण आदेश था, उसे रोककर	~~क्रोष्टु इ~~
अच्च घेः	ङि को औत् और उकार को अकार आदेश	क्रोष्ट औत्
हलन्त्यम्	तकार कि इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	क्रोष्टौ इति रूपं

क्रोष्टुषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय अनुबन्ध लोप	क्रोष्टुसु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार	क्रोष्टुषु इति सिद्धं

हे क्रोष्टो

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
	सम्बोधन के एकवचन में सु प्रत्यय	क्रोष्टु सु
ह्रस्वस्य गुणः	ह्रस्वान्त अङ्ग (उकार) को गुण	क्रोष्टो सु
एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः	सम्बुद्धि के हल का लोप	क्रोष्टो इति सिद्धं

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	क्रोष्टा	क्रोष्टारौ	क्रोष्टारः
द्वितीया	क्रोष्टारम्	"	क्रोष्टून्
तृतीया	क्रोष्ट्रा = क्रोष्टुना	क्रोष्टुभ्याम्	क्रोष्टुभिः
चतुर्थी	क्रोष्ट्रे = क्रोष्टवे	"	क्रोष्टुभ्यः
पञ्चमी	क्रोष्टुः = क्रोष्टोः	"	"
षष्ठी	" = "	क्रोष्ट्रोः = क्रोष्ट्वोः	क्रोष्टूनाम्
सप्तमी	क्रोष्टरि = क्रोष्टौ	" = "	क्रोष्टुषु
सम्बोधन	हे क्रोष्टो	हे क्रोष्टारौ	हे क्रोष्टारः

ना

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	नृ + सु
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः	गुण प्राप्त था। उसे रोककर	
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च	नृ को अनङ् आदेश	
	अनुबन्ध लोप करने पर	नृ अन् सु
अप्तृन्तृच् ..... इत्यादि	सूत्र से उपधा को दीर्घ	नृ आन् सु
	संयुक्त करने पर	नान् सु
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सु का लोप	नान्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	नकार का लोप	ना इति सिद्धं

नरौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	नृ औ
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः	गुण करने पर	नृ अर् औ
	संयुक्त करने पर	नरौ इति सिद्धं

नरः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	नृ जस्
	अनुबन्धलोप करने पर	नृ अस्
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः	गुण करने पर	न् अर् अस्
	संयुक्त करने पर	नरस्
ससजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	नरर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	नरः इति सिद्धं

नरम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	नृ अम्
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः	गुण करने पर	न् अर् अम्
	संयुक्त करने पर	नरम् इति सिद्धं

नॄन्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के	

	बहुवचन में शस् प्रत्यय अनुबन्धलोप करने पर	नृ + अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	नॄस्
तस्माच्छसो नः पुंसि	सकार को नकार आदेश	नॄन् इति सिद्धं

न्रा

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन टा प्रत्यय अनुबन्धलोप	नृ आ
इको यणचि	ऋकार को रेफादेश	न् र् आ
	संयुक्त करने पर	न्रा इति सिद्धं

नृभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याँ प्रत्यय	नृ + भ्याँ
	संयुक्त करने पर	नृभ्यामिति सिद्धं

नृभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	नृ + भिस्
	संयुक्त करने पर	नृभिस्
ससजुषो रुः	स् को रु अनुबन्धलोप	नृभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	नृभिः इति सिद्धं

न्रे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	नृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के	
	एकवचन में ङे प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	नृ ए
इको यणचि	ऋकार को रेफादेश	न् र् ए
	संयुक्त करने पर	न्रे इति सिद्धं

नृभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	नृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के	
	बहुवचन में भ्यस्	
	प्रत्यय	नृ + भ्यस्
	संयुक्त करने पर	नृभ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप करने पर	नृभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	नृभ्यः इति सिद्धं

नुः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	नृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के	
	एकवचन में ङसि प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	नृ + अस्
ऋत उत्	इस सूत्र से ~~[illegible]~~ उकार आदेश	
उरण् रपरः	~~इसकी सहायता से~~	
	उर् आदेश रपरत्व	नुर् ~~अस्~~
	संयुक्त करने पर	नुरस्
रात् सस्य	सकार लोप	नुर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	नुः इति सिद्धं

नॄः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	नृ ओस्
इको यणचि	ऋकार को रेफादेश संयुक्त करने पर	न्र् ओस्, न्रोस्
स-सजुषो रुः	स को रु। अनुबन्धलोप	न्रोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	न्रोः
		इति सिद्धं

नृणाम् - नॄणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के बहुवचन में आम् प्रत्यय	नृ आम्
इको यणचि	यण् प्राप्त था। उसे रोककर	
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् आगम	
	अनुबन्धलोप	नृ न् आम् = नृनाम्
ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्	नकार को णकार हुआ	नृणाम्
नृ च	विकल्प से नृ को दीर्घ	नॄनाम्
ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यं	नकार को णकार	नॄणाम्
	अभाव पक्ष में	नृणाम्
		इति सिद्धं

नरि

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	नृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय अनुबन्धलोप करने पर	नृ इ

इको यणचि	यण् प्राप्त था, उसे रोककर	
ऋतो ङि-सर्वनामस्थानयोः	गुण करने पर	नृ अर् इ
	संयुक्त करने पर	नरि इति सिद्धं

नृषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	नृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के	
	बहुवचन में सुप् प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	नृ सु
आदेश प्रत्ययोः	सकार को षकार आदेश	नृ षु
		इति सिद्धं

हे नः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	नृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि सूत्र से सम्बुद्धि में		

	सु प्रत्यय, अनुबन्धलोप	नृ स्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्ध लोप करने पर	नृ र्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	नृः
		इति सिद्धं

गौः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के	
	एकवचन में सु प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	गो स्
गोतो णित्	इस सूत्र से सकार को	
	णिद्वत् भाव	
अचो ञ्णिति	ओकार को वृद्धि आदेश	गौस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	गौर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	गौः इति सिद्धं

गावौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजसमौट्...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन	
	में औ प्रत्यय	गो औ
गोतो णित्	औकार को णिद्वद्भाव	
अचो ञ्णिति	ओकार को वृद्धि आदेश	गौ औ
एचोऽयवायावः	गौ के औकार को आव् आदेश	ग् आव् औ
	संयुक्त करने पर	गावौ
		इति सिद्धं

गावः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के	
	बहुवचन में जस् प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	गो अस्
गोतो णित्	अस् को णिद्वद्भाव	
अचो ञ्णिति	गो के ओकार को वृद्धि	गौ अस्
एचोऽयवायावः	औ को आव् आदेश	गाव् अस्
ससजुषो रुः	स को रु, अनुबन्धलोप	गावर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	गावः
		इति सिद्धं

गाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन	
	में अम् प्रत्यय	गो अम्
गोतो णित्	णिद्वत था, उसे रोक कर	
औतोऽम्शसोः	ओकार-अकार को आकार	
	एकादेश	गाम्
		इति सिद्धं

गाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	गो शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्……इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	गो अस्
गोतो णित्	णिद्वत् प्राप्त था। इसे रोककर	
औतोऽम्शसोः	ओकार-अकार को आकार एकादेश	गास्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	गाः इति सिद्धं

गवा

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	गोशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्……इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय, अनुबन्धलोप	गो आ
~~गोतो णित्~~ ~~अचो ञ्णिति~~	~~णिद्वत्~~ ~~ओकार की वृद्धि~~	~~गौ आ~~
एचोऽयवायावः	ओकार को अव् आदेश	गव् आ / गवा इति सिद्धं

गोभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	गो शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्……इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	गोभ्याम् इति सिद्धं

गोभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	गोशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	

स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	गो भिस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्ध लोप	गोभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	गोभिः
		इति सिद्धं

गवे

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	गो शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय। अनुबन्ध लोप	गो ए
एचोऽयवायावः	ओकार को अव् आदेश	गवे
		इतिसिद्धं

गोभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	गो शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	

स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	गो भ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्ध लोप	गोभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	गोभ्यः
		इति सिद्धं

गोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	गो शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय। अनुबन्ध लोप	गो अस्
ङसि-ङसोश्च	पूर्वरूप एकादेश हुआ	गोस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्ध लोप	गोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	गोः
		इति सिद्धं

गवोः

सूत्र	कार्य	स्थिति

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	गो ओस्
एचोऽयवायावः	ओकार को अव् आदेश	गवोस्
स-सजुषो रुः	सस को रु अनुबन्धलोप	गवोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	गवोः इति सिद्धं

गवाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के बहुवचन में आम् प्रत्यय	गो आम्
एचोऽयवायावः	ओकार को अव् आदेश	गवाम् इति सिद्धं

गवि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय अनुबन्धलोप करने पर	गो इ
एचोऽयवायावः	ओकार को अव् आदेश	गवि इति सिद्धं

गोषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय अनुबन्धलोप	गो सु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार आदेश	गोषु इति सिद्धं

हे गौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....... इत्यादि	सूत्र से सम्बुद्धि में	
	सु प्रत्यय	गो सु
एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः	सु का लोप	
गोतो णित्	णिद्वद्भाव	
अचो ञ्णिति	ओकार को वृद्धि आदेश	गौ

हे गौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गो शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
	सम्बुद्धि में सु प्रत्यय	गो सु

धाता

सूत्र	कार्य	स्थिति
	धातृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय।	धातृ सु
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः	गुण आदेश प्राप्त। उसे रोककर	
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च	अनङ् आदेश, ङ् का लोप	धातृ अन् सु =धातन् सु
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सु का लोप	धातन्
अप्तृन्...... इत्यादि	सूत्र से उपधा को दीर्घ	धातान्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	नकार का लोप	धाता
		इति सिद्धं

धातारौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	धातृ शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् स्वौजस्.....इत्यादि	प्रातिपदिक संज्ञा सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	धातृ औ
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः अप्तृन्....इत्यादि	गुण करने पर सूत्र से उपधा को दीर्घ	धातर् औ धातारौ इति सिद्धं

धातारः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	धातृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप करने पर	धातृ अस्
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः अप्तृन्.... इत्यादि	गुण आदेश सूत्र से उपधा को दीर्घ	धातर् अस् धातारस्
ससजुषो रुः खरवसानयोर्विसर्जनीयः	स् को रु, अनुबन्ध लोप रेफ को विसर्ग	धातारः धातारः इति सिद्धं

धातारम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	धातृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	धातृ अम्
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः अप्तृन्....इत्यादि	ऋकार को गुण सूत्र से उपधा को दीर्घ	धातर् अम् धातारम् इति सिद्धं

धातॄन्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	धातृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	धातारस्

स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय। अनुबन्धलोप	धातृ अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	धातॄ स्
तस्माच्छसो नः पुंसि	सकार को नकार	धातॄन् इति सिद्धं

धात्रा

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	धातृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	धातृ आ
इको यणचि	ऋकार को रेफ (यण) आदेश	धात् र् आ
	संयुक्त करने पर	धात्रा इति सिद्धं

धातृभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	धातृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	धातृभ्याम् इति सिद्धं

धातृभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	धातृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	धातृभिस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	धातृभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	धातृभिः इति सिद्धं

धात्रे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	धातृ शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन ङे प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	धातृ ए
इको यणचि	ऋकार को रेफ (यण्) आदेश, संयुक्त करने पर	धात्र् ए धात्रे इति सिद्धिः

धातृभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	धातृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा।	
स्वौजस्..... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में भ्यस् प्रत्यय।	धातृ भ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्ध लोप	धातृभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	धातृभ्यः इति सिद्धिः

धातुः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	धातृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	धातृ अस
इको यणचि	यण् प्राप्त था, उसे रोककर	
ऋत उत्	उकार एकादेश।	
उरण् रपरः	इस सूत्र से उर् के रूप में हुआ	धातुर् स
	संयुक्त करने पर	धातुर्स्
रात् सस्य	संयोगान्त सकार लोप	धातुर्
ससजुषो रुः	स को रु, अनुबन्ध लोप	
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	धातुः इति सिद्धिः

धात्रोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	धातृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के द्विवचन में	

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ओस् प्रत्यय।	धातृ ओस्
इकोयणचि	ऋकार को रेफ (यण्) आदेश	धातृ र ओस्
	संयुक्त करने पर	धात्रोस्
ससजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप करने पर	धात्रोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	धात्रोः
		इति सिद्धं

धातॄणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	धातृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के	
	बहुवचन में आम् प्रत्यय	धातृ आम्
इको यणचि	यण् प्राप्त था। उसे रोककर	
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् आगम	
	अनुबन्धलोप	धातृ न् आम्
नामि	दीर्घ और संयुक्त करने पर	धातॄनाम्
ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यं	नकार को णकार आदेश	धातॄणाम्
		इति सिद्धं

धातरि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	धातृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा।	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन	
	में ङि प्रत्यय अनुबन्धलोप	धातृ इ
इको यणचि	यण् प्राप्त था। उसे रोककर	
ऋतो ङि-सर्वनामस्थानयोः	गुण करने पर	धात अर् इ
	संयुक्त करने पर	धातरि
		इति सिद्धं

धातृषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	धातृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के	
	बहुवचन में सुप् प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	धातृ सु

आदेश प्रत्यययोः	सकार को षकार आदेश	धातृषु
		इति सिद्धं

हे धातः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	धातृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
	सम्बुद्धि में सु प्रत्यय	धातृ सु
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	गुण करने पर	धातर् सु
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सु का लोप	धातर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हे धातः
		इति सिद्धं

पिता

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ....इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय,	पितृ सु
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	गुण प्राप्त था उसे रोक कर	
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां	अनङ् आदेश, अनुबन्धलोप होकर	पितअन् सु
अप्तृन् .... इत्यादि	सूत्र से उपधा को दीर्घ	पितान् सु
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	इस सूत्र से सु का लोप	पितान्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	नकार लोप	पिता
		इति सिद्धं

पितरौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ......इत्यादि	सूत्र प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय,	पितृ औ
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	गुण करने पर	पितअर् औ
	संयुक्त करने पर	पितरौ
		इति सिद्धं

पितरः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में	
	जस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	पितृ अस्
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः	गुण आदेश हुआ	पित् अर् अस्
	संयुक्त करने पर	पितरस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	पितरर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पितरः
		इति सिद्धं

पितरम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	पितृ अम्
इको यणचि	यण् प्राप्त था, उसे रोककर	
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः	गुण आदेश हुआ	पित् अर् अम्
	संयुक्त करने पर	पितरम्
		इति सिद्धं

पितॄन्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	पितृ अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	पितॄस्
तस्माच्छसो नः पुंसि	सकार को नकार आदेश	पितॄन्
		इति सिद्धं

पित्रा

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	

स्वौजस...... इत्यादि सूत्र से तृतीया के एकवचन में
टा प्रत्यय, अनुबन्ध लोप हुआ पितृ आ

सूत्र	कार्य	स्थिति
इको यणचि	ऋकार को रेफ (यण्) आदेश	पित्र् आ
	संयुक्त करने पर	पित्रा
		इति सिद्धं

पितृभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	पितृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	पितृभ्याम्
		इति सिद्धं

पितृभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	पितृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	पितृभिस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्ध लोप	पितृभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पितृभिः
		इति सिद्धं

पित्रे

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	पितृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	पितृ ए
इको यणचि	ऋकार को रेफ (यण्) आदेश	पित्रे
		इति सिद्धं

पितृभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	पितृ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस......... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन	

	भ्यस् प्रत्यय	पितृभ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	पितृभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पितृभ्यः
		इति सिद्धं

पितुः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय,	
	अनुबन्ध लोप करने पर	पितृ अस
ऋत उत्	उकार एकादेश	
उरण् रपरः	इस सूत्र से उर् के रूप में हुआ	पितुरस्
रात् सस्य	सकार लोप	पितुर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पितुः
		इति सिद्धं

पित्रोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र षष्ठि के द्विवचन में ओस् प्रत्यय।	पितृ ओस्
इको यणचि	ऋकार को रेफ (यण्) आदेश	पित्रोस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	पित्रोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	पित्रोः
		इति सिद्धं

पितॄणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्....... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के बहुवचन में आम् प्रत्यय।	पितृ आम्
इको यणचि	यण् प्राप्त था। उसे रोककर	

सूत्र	कार्य	स्थिति
ह्रस्वनद्यापो नुट्	नुट् आगम	पितृ नाम्
नामि	ऋकार को दीर्घ	पितॄनाम्
६ ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्	नकार को णकार	पितॄणाम्
		इति सिद्धं

पितरि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
3 स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप करने पर	पितृ इ
इको यणचि	यण् प्राप्त था, उसे रोककर	
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	गुण आदेश हुआ	पितर् इ
	संयुक्त करने पर	पितरि
		इति सिद्धं

पितृषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	पितृसु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार आदेश	पितृषु
		इति सिद्धं

हे पितः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	पितृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
	सम्बुद्धि में सु प्रत्यय	पितृ सु
	अनुबन्ध लोप करने पर	पितृ स्
ऋतो ङि सर्वनामस्थानयोः	गुण आदेश हुआ	पितर् सु
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सु का लोप	पितर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हे पितः
		इति सिद्धं

राः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय, अनुबन्धलोप	रै स्
रायो हलि	रै को आकार अन्तादेश	रास्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्ध लोप	रार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	राः
		इति सिद्धं

रायौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय।	रै औ
एचोऽयवायावः	रै को आयादेश	रायौ
		इति सिद्धं

रायः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिके	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	रै अस्
एचोऽयवायावः	रै को आय् आदेश	राय् अस्
	संयुक्त करने पर	रायस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	रायर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	रायः
		इति सिद्धं

रायम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिके	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	रै अम्

एचोऽयवायावः — ऐ को आय् आदेश — र् आय् अम्
संयुक्त करने पर — रायम्
इति सिद्धं

राया

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय। अनुबन्धलोप	रै आ
एचोऽयवायावः	रै को आय् आदेश	राया
		इति सिद्धं

राभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	रै भ्याम्
रायो हलि	ऐकार को आकारान्तादेश	राभ्याम्
		इति सिद्धं

राभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय।	रै भिस्
रायो हलि	ऐकार को आकारान्तादेश	राभिस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	राभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	राभिः
		इति सिद्धं

रायै

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्........इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन	

में ङे प्रत्यय, अनुबन्धलोप है ए

सूत्र	कार्य	स्थिति
एचोऽयवायावः	ऐ को आय् आदेश	राये
		इतिसिद्धं

राभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ऐ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिकसंज्ञा	
स्वौजस्........इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय है	भ्यस्
रायो हलि	ऐकार को आकार आदेश	राभ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	राभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	राभ्यः
		इतिसिद्धं

रायः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ऐ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय, अनुबन्धलोप है	अस्
एचोऽयवायावः	ऐकार को आय् आदेश	रायस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	रायर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	रायः
		इतिसिद्धं

रायोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ऐ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिकसंज्ञा	
स्वौजस्----इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	है ओस्
एचोऽयवायावः	ऐकार को आय् आदेश	रायोस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	रायोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	रायोः
		इतिसिद्धं

रायाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के बहुवचन में आम् प्रत्यय	रै आम्
रायोऽचवायावः	ऐकार को आय् आदेश	रायाम्
		इतिसिद्धं

रायि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय, अनुबन्धलोप	रै इ
रयोऽयवायावः	ऐकार को आय् आदेश	रायि
		इतिसिद्धं

रासु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	रै सु
रायो हलि	ऐकार को आकार आदेश	रासु
		इति सिद्धं

हे राः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रै शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से सम्बुद्धि में सु प्रत्यय, अनुबन्धलोप	रै स्
रायो हलि	ऐकार को आकार आदेश	रास्
स-सजुषोरुः	स को रु, अनुबन्धलोप	रार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हे राः
		इतिसिद्धं

ग्लौः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ग्लौ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय। अनुबन्धलोप	ग्लौ स्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	ग्लौर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	ग्लौः
		इति सिद्धं

ग्लावौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ग्लौ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	ग्लौ औ
एचोऽयवायावः	औ को आव् आदेश	ग्लाव् औ
		= ग्लावौ
		इति सिद्धं

ग्लावः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ग्लौ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय। अनुबन्धलोप	ग्लौ अस्
एचोऽयवायावः	औकार को आव् आदेश	ग्लावस्
स-सजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	ग्लावर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	ग्लावः
		इति सिद्धं

ग्लावम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ग्लौ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	ग्लौ अम्
एचोऽयवायावः	औकार को आव् आदेश	ग्लावम्
		इति सिद्धं

ग्लावा

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	ग्लौ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	ग्लौ आ
एचोऽयवायावः	औकार को आव् आदेश	ग्लावा इति सिद्धं

ग्लौभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	ग्लौ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्यां प्रत्यय	ग्लौभ्यां इति सिद्धं

ग्लौभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	ग्लौ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय	ग्लौभिस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	ग्लौभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	ग्लौभिः इति सिद्धं

ग्लावे

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	ग्लौ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय। अनुबन्धलोप	ग्लौ ए
एचोऽयवायावः	औकार को आव् आदेश	ग्लावे इति सिद्धं

ग्लौभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ग्लौ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय,	ग्लौभ्यस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	ग्लौभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	ग्लौभ्यः
		इति सिद्धं

ग्लावः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ग्लौ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप	ग्लौ अस्
एचोऽयवायावः	औकार को आव् आदेश	ग्लावस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	ग्लावर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	ग्लावः इति सिद्धं

ग्लावोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ग्लौ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	ग्लौ ओस्
एचोऽयवायावः	औकार को आव् आदेश	ग्लावोस्
स-सजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	ग्लावोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	ग्लावोः
		इति सिद्धं

ग्लावाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ग्लौ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से षष्ठि के एकवचन	

	में आम् प्रत्यय	ग्लौ आम्
एचोऽयवायावः	औकार को आव् आदेश	ग्लावाम् इति सिद्धं

ग्लवि

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	ग्लौ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ......इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय, अनुबन्धलोप	ग्लौ इ
एचोऽयवायावः	औकार को आव् आदेश	ग्लावि इति सिद्धं

ग्लौषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	ग्लौ शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ....इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	ग्लौसु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार	ग्लौषु इति सिद्धं

इत्यजन्ताः पुंल्लिङ्गाः

अथ अजन्त-स्त्रीलिंगाः

216 औङ आपः = आबन्त अंग से परे औ को शी आदेश होता है।

217 सम्बुद्धौ च = आबन्त अंग को एकार होता है सम्बुद्धि में।

218 आङि चापः = आङ् ओस् परे रहते आबन्त अंग को एकार होता है।

219 याडापः = आबन्त अंग से परे ङित् वचन को याट् का आगम होता है।

220 सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च = आबन्त सर्वनाम से परे ङित् वचन को स्याट् का आगम होता है और आप् को ह्रस्व होता है।

221 विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ = दिक्समास बहुव्रीहि की सर्वनामसंज्ञा विकल्प से होती है।

222 ङिति ह्रस्वश्च = इयङ् उवङ् के स्थानी स्त्री शब्द

से भिन्न नित्य स्त्रीलिंगवाची ईकार ऊकार तथा ह्रस्व इवर्ण उवर्ण की नदीसंज्ञा विकल्प से होतीहै, ङित् वचन परे रहते।

२२३ इदुद्भ्याम् = नदी संज्ञक इकार उकार से परे ङि को आम् होता है।

२२४ त्रिचतुरोः स्त्रियाँ तिसृचतसृ = त्रि और चतुर शब्द को स्त्रीलिङ्ग में तिसृ और चतसृ आदेश होता है।

२२५ अचि र ऋतः = तिसृ चतसृ शब्द के ऋ को र होता है अच् परे रहते।

२२६ न तिसृचतसृ = तिसृ चतसृ को आम् में दीर्घ नहीं होता।

२२७ स्त्रियाः = स्त्री शब्द को इयङ् आदेश होताहै, अजादि प्रत्यय परे रहते।

२२८ वामृशसोः = स्त्री शब्द को इयङ् विकल्प से होता है; अम् और शस् में।

२२९ नेयङुवङ्स्थानावस्त्री = इयङ् उवङ् के स्थानी नित्य स्त्रीलिंग ईकार ऊकार की नदी संज्ञा नहीं होती है, स्त्री शब्द को छोड़कर (अर्थात् स्त्री शब्द की तो नदीसंज्ञा होती है)।

२३० वामि = इयङ् उवङ्-स्थानी, नित्य स्त्रीलिङ्ग ईकार ऊकार की नदी संज्ञा होती है विकल्प से आम् परे रहते; स्त्री को छोड़कर।

२३१ स्त्रियां च = स्त्री वाची क्रोष्टु शब्द के तृजन्त के सदृश रूप होते हैं।

२३२ ऋन्नेभ्यो ङीप् = ऋदन्त और नान्तों से ङीप् होता है स्त्रीलिङ्ग में।

२३३ न षट्स्वस्त्रादिभ्यः = षट्संज्ञक और स्वस्त्रादियों से ङीप् और टाप् नहीं होते।

रमा

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	रमाशब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......	इत्यादि सूत्र से प्रथमा के एकवचन	

हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल् — सु का लोप — रमा इति सिद्धं

रमे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	रमा औ
औङ आपः	औ को शी आदेश	रमा शी
[illegible]	[illegible]	
लशक्वतद्धिते	शकार की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	रमा ई
आद्गुणः	गुण करने पर	रमे

इति सिद्धं

रमाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	रमा अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था	
दीर्घाज्जसि च	इससे निषेध हुआ	
अकः सवर्णे दीर्घः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	रमास्
ससजुषो रुः	स को रु, अनुबन्धलोप	रमार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	रमाः

इति सिद्धं

रमाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन	

में अम् प्रत्यय। रमा अम्

अकः सवर्णे दीर्घः — दीर्घ करने पर — रमाम्

इति सिद्धं

रमया

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	रमा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय, अनुबन्धलोप	रमा आ
आङि चापः	आ के आकार को एकार आदेश	रमे आ
एचोऽयवायावः	एकार को अय् आदेश	रमय् आ = रमया

इति सिद्धं

रमाभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	रमा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	रमा भ्याम्

इति सिद्धं

रमाभिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	रमा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के बहुवचन में भिस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	रमा भिस्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	रमाभिर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	रमाभिः

इति सिद्धं

रमायै

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	रमा शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	

सूत्र	कार्य	स्थिति
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय। अनुबन्धलोप	रमा ए
याडापः	एकार को याट् आगम	रमायाट्ए
हलन्त्यम्	टकार कि इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	रमायाए
	~~[illegible]~~	~~[illegible]~~
वृद्धिरेचि	वृद्धि करने पर	रमायै
		इति सिद्धि

रमाभ्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के बहुवचन में भ्यस् प्रत्यय	रमाभ्यस्
ससजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	रमाभ्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	रमाभ्यः
		इति सिद्धि

रमायाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय। अनुबन्धलोप	रमा अस्
याडापः	ङसि के अस् को याट् आगम	रमायाट् + अस्
हलन्त्यम्	अन्तिम हल् (टकार) की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	रमाया अस्
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ एकादेश करने पर	रमायास्
ससजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	रमायार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	रमायाः
		इति सिद्धि

रमयोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	

स्वौजस्........इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में ओस् प्रत्यय	रमा ओस्
आङि चापः	आकार को एकार आदेश	रमे ओस्
एचोऽयवायावः	एकार को अय् आदेश	रमय् ओस्
		= रमयोस्
ससजुषो रुः	स को रु। अनुबन्ध लोप	रमयोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	रमयोः
		इति सिद्धम्

रमाणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	रमा आम्
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ प्राप्त था उसे रोक कर	
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् आगम	रमानाम्
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार	रमाणाम्
		इति सिद्धम्

रमायाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय। [struck out]	रमा ङि
याडापः	ङि के इकार को याट् आगम	रमा याट् ङि
हलन्त्यम्	अन्तिम वर्ण टकार कि इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	रमा या ङि
ङेराम्नद्याम्नीभ्यः	ङि को आम् आदेश	रमा या आम्
अकः सवर्णे दीर्घः	आकार एकादेश	रमायाम्
		इति सिद्धम्

रमासु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्........इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन	

में सुप्रत्यय, अनुबन्धलोप रमा सु

इति सिद्धं

हे रमे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से सम्बुद्धि में	
	सु प्रत्यय	रमा सु
सम्बुद्धौ	आबन्त अंग को एकार	
	आदेश	रमे सु
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सु का लोप	हे रमे
		इति सिद्धं

हे रमे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
	सम्बोधन के द्विवचन	
	में औ प्रत्यय	हे रमा औ
वृद्धिरेचि	वृद्धि प्राप्त थी, उसे रोककर	
औङ आपः	औ को शी आदेश, अनुबन्धलोप	रमा ई
आद्गुणः	गुण करने पर	हे रमे
		इति सिद्धं

हे रमाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	रमा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
	सम्बोधन के बहुवचन	
	में जस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	रमा अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	दीर्घ प्राप्त था,	
दीर्घाज्जसि च	इस सूत्र से निषेध हुआ	
अकः सवर्णे दीर्घः	सवर्ण दीर्घ करने पर	रमास्
ससजुषो रुः	स को रु	रमार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हे रमाः
		इति सिद्धं

सर्वो

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्वा शब्द कि	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ....इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के	
	एकवचन मे सु प्रत्यय।	सर्वा सु
हल्ङ्याब्भ्योदीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सु का लोप	सर्वा
		इति सिद्धं

सर्वे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्वा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के	
	द्विवचन में औ प्रत्यय	सर्वा औ
औङ आपः	औ को शी आदेश	सर्वा शी
	अनुबन्ध लोप करने पर	सर्वा ई
आद्गुणः	गुण करने पर	सर्वे
		इति सिद्धं

सर्वाः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्वा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के	
	बहुवचन में जस् प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप	सर्वा अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था	
	~~[illegible]~~	
दीर्घाज्जसि च	इस सूत्र से निषेध हुआ	
अकः सवर्णे दीर्घः	~~[illegible]~~ दीर्घ एकादेश	सर्वास्
ससजुषो रुः	स को रु अनुबन्ध लोप	सर्वार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सर्वाः
		इति सिद्धं

सर्वस्यै

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्वा शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में	
	ङे प्रत्यय, अनुबन्धलोप	सर्व ए
सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च	ए (ङे) को स्याट् का आगम और आप् को ह्रस्व आदेश	सर्वस्याट्
हलन्त्यम्	टकार की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	सर्वस्याए
वृद्धिरेचि	वृद्धि एकादेश	सर्वस्यै
		इति सिद्ध

सर्वस्याः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्व शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप करने पर	सर्व अस्
अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ प्राप्त था उसे रोककर	
सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च	ङसि के अस् को स्याट् का आगम आप् को ह्रस्व आदेश (अकार)	सर्वस्याट्अस
हलन्त्यम्	अन्तिम हल् की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	सर्वस्याअस
अकः सवर्णे दीर्घे	आकार एकादेश हुआ	सर्वस्यास्
ससजुषो रुः	स् को रु। अनुबन्धलोप	सर्वस्यार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	सर्वस्याः
		इति सिद्ध

सर्वासाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सर्वा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय।	सर्वाआम्
आमि सर्वनाम्नः सुट्	आम् को सुट् आगम	सर्वास् आम्
		= सर्वासाम्
		इति सिद्ध

सर्वस्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	सर्व शब्द की प्रातिमदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय	सर्व ङि
	~~अनुबन्ध लोप~~	~~सर्व इ~~
ङेराम्नद्याम्नीभ्यः	ङि को आम् आदेश	सर्व आम
स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ	स्थानि (ङि) के स्थान पर हुआ आदेश, स्थानि के समान ही होता है अतः	
सर्वनाम्नः स्याड्ढ्रस्वश्च	आम् को स्याट् आगम और आप् को ह्रस्व आदेश	सर्वस्याआम् = सर्वस्याम् इति सिद्धं

मतिः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	मति शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	मति स्
ससजुषो रुः	स् को रु, अनुबन्ध लोप	मति र्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	मतिः इति सिद्धं

मती

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	मति शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	मति औ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ करने पर	मती इति सिद्धं

मतयः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	मति शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय। अनुबन्धलोप	मति अस्
प्रथमयो पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था। उसे रोक कर	
जसि च	इकार को गुण आदेश	मते अस्
एचोऽयवायावः	एकार को अय् आदेश	मतय् अस् = मतयस्
स-सजुषोरुः	स् को रु, अनुबन्धलोप	मतयर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	मतयः इति सिद्धं

मतिम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन में अम् प्रत्यय	मति अम्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था। उसे रोक कर	
अमि पूर्वः	पूर्वरूप आदेश	मतिम् इति सिद्धं

मतीः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	मति शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय।	मति शस्
लशक्वतद्धिते	शकार कि इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	मति अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	मतीस्

ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	मतीर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	मतीः
		इति सिद्धं
तस्माच्छसो नः पुंसि	'पुं' से अर्थ हुआ कि सकार को नकार केवल पुल्लिंग में ही होता है।	

मत्या

सूत्र	कार्य	स्थिति
	मति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्..... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	मति आ
इको यणचि	इकार को यकार आदेश	मत्य् आ
		= मत्या इति सिद्धं

मत्यै = मतये

सूत्र	कार्य	स्थिति
	मति शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस..... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय। अनुबन्धलोप	मति ए
ङिति ह्रस्वश्च	विकल्प से नदी संज्ञा	
आण्नद्याः	ङित् (ए) को आट् आगम, अनुबन्धलोप	मति आ ए
आटश्च	वृद्धि एकादेश	मति ऐ
इको यणचि	इकार को यकार आदेश	मत्य् ऐ
		= मत्यै
		इति सिद्धं
	अभाव पक्ष में	मति ए
शेषो घ्यसखि	मति की घि संज्ञा	
घेर्ङिति	इकार को गुण आदेश	मते ए
एचोऽयवायावः	एकार को अय् आदेश	मतय् + ए
		= मतये
		इति रूपं

मत्याः = मतेः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	मति शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के एकवचन में ङसि प्रत्यय, अनुबन्धलोप	मति अस्
ङिति ह्रस्वश्च	विकल्प से नदी संज्ञा	
आण्नद्याः	ङिद्वचन (अस्) को आट् का आगम, अनुबन्धलोप	मति आ अस्
आटश्च	आकार-अकार को वृद्धि एकादेश	मति आस्
इको यणचि	इकार को यकार आदेश	मत्यास्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	मत्यार्
~~ख~~ खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	मत्याः
		इति सिद्धम्
	अभावपक्ष में	मति अस्
शेषो घ्यसखि	मति की घि संज्ञा	
घेर्ङिति	घि संज्ञक को गुण आदेश	मते अस्
एचोऽयवायावः	एकार को अय् आदेश प्राप्त था उसे रोक कर	~~[illegible]~~
ङसिङसोश्च	एकार-अकार को पूर्वरूप एकादेश	मतेस्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	मतेर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	मतेः
		इति सिद्धम्

मत्याम् = मतौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	मति शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.......इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय ~~अनुबन्धलोप~~	मति ङि
ङिति ह्रस्वश्च	विकल्प से मति के इकार कि नदी संज्ञा	
इदुद्भ्याम्	ङि को आम् आदेश	मति आम्

इकोयणचि | इकार को यकार आदेश | मत्याम्
इतिसिद्धं
अभाव पक्ष में | मति + औ
शेषोध्यसखि | मति शब्द की घि संज्ञा
अच्च घेः | ङि को औत् और इकार को अ
आदेश । औत् का अनुबन्ध लोप मत औ
= मतौ
इति रूप

त्रिस्रः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	त्रि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	त्रि अस्
त्रिचतुरोः स्त्रियाँ तिसृचतसृ	त्रि को तिसृ आदेश	तिसृ अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्व सवर्ण दीर्घ प्राप्त था उसे रोक कर	
अचि र ऋतः	ऋकार को रेफ आदेश	तिस्र् अस्
		= तिस्रस्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	तिस्रर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	तिस्रः इतिसिद्धं

तिस्रः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	त्रि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस..... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	त्रि अस्
त्रिचतुरोः स्त्रियाँ तिसृचतसृ	त्रि को तिसृ आदेश	तिसृ अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्व सवर्ण दीर्घ प्राप्त था। उसे रोक कर	
अचि र ऋतः	ऋकार को रेफादेश	तिस्र् रअस
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	= तिस्रर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	तिस्रः इतिसिद्धं

तिसृणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	त्रि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	त्रि आम्
~~ह्रस्वनद्यापो नुट्~~	~~आम् को नुट् आगम~~	~~त्रि आम्~~
त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृ चतसृ	त्रि को तिसृ आदेश	तिसृ आम्
अचि र ऋतः	ऋकार को रेफादेश प्राप्त था, इससे रोककर	~~[illegible]~~
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् आगम	तिसृनाम्
नामि	इस सूत्र से दीर्घ प्राप्त था	
न तिसृचतसृ	इससे निषेध हुआ	तिसृनाम्
ऋवर्णान्नस्य णत्वं वाच्यम्	नकार को णकार आदेश	तिसृणाम्
		इति सिद्धम्

तिसृषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	त्रि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	त्रि सु
त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृ चतसृ	त्रि को तिसृ आदेश	तिसृसु
आदेश प्रत्यययोः	सकार को षकार आदेश	तिसृषु
		इति सिद्धम्

द्वे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	द्वि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	द्वि औ
त्यदादीनामः	इकार को अकार आदेश	द्व औ
~~[illegible]~~ अजाद्यतष्टाप्	स्त्रीत्व की विवक्षा में, टाप् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	द्व आ औ

~~प्रथमयोः पूर्वसवर्णः~~	~~पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश~~	~~द्वऔ~~
अकः सवर्णे दीर्घः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	द्वाऔ
औङ आपः	औ को शी आदेश	
	अनुबन्धलोप करने पर	द्वाई
आद्गुणः	एकार गुण एकादेश	द्वे
		इति सिद्धं

द्वाभ्याम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	द्वि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के	
	द्विवचन में भ्याम् प्रत्यय	द्वि भ्याँ
त्यदादीनमः	इकार को अकार आदेश	द्व भ्याम्
अजाद्यतष्टाप्	स्त्रीत्व कि विवक्षा में टाप्	
	प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	द्व आ भ्याम्
अकः सवर्णे दीर्घः	सवर्ण दीर्घ एकादेश	द्वाभ्याम्
		इति सिद्धं

द्वयोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	द्वि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र षष्ठी के बहुवचन	
	में ओस् प्रत्यय	द्वि ओस्
त्यदादीनमः	इकार को अकार आदेश	द्व ओस्
अजाद्यतष्टाप्	स्त्रीत्व कि विवक्षा में	
	टाप् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	द्व आ ओस्
अकः सवर्णे दीर्घः	सवर्ण दीर्घ एकादेश	द्वा ओस्
आङि चापः	आकार को एकार आदेश	द्वे ओस्
एचोऽयवायावः	ए को अय् आदेश	द्वयोस्
स-सजुषो रुः	स् को रुत्व	द्वयोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	द्वयोः
		इति सिद्धं

गौरी

सूत्र	कार्य	स्थिति

गौरी शब्द की

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय,	गौरीसु
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सु का लोप	गौरी
		इति सिद्ध

गौर्यौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गौरी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	गौरीऔ
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था।	
दीर्घाज्जसि च	इससे निषेध हुआ	गौरीऔ
इकोयणचि	इकार को यकार आदेश	गौर्य्औ
		= गौर्यौ
		इति सिद्ध

गौर्यः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गौरी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	गौरीअस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	दीर्घ प्राप्त था।	
दीर्घाज्जसि च	इस सूत्र से निषेध हुआ	गौरीअस्
इको यणचि	यण् करने पर	गौर्य्अस्
		= गौर्यस्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	गौर्यर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	गौर्यः
		इति सिद्ध

हे गौरि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सम्बोधन के एकवचन में सु प्रत्यय	हे गौरीसु
यू स्त्र्याख्यौ नदी	गौरी शब्द की नदी संज्ञा	

अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः नदीसंज्ञक को ह्रस्व आदेश गौरिसु
एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः सु का लोप हे गौरि
इति सिद्धम्

गौरी

सूत्र	कार्य	स्थिति
	गौरीशब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन टा प्रत्यय,	
	अनुबन्धलोप करने पर	गौरीआ
इको यणचि	यण् आदेश हुआ	गौ

स्त्री

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्त्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	स्त्रीसु

हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल् सु का लोप स्त्री
इति सिद्धम्

हे स्त्रि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्त्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्..... इत्यादि	सूत्र से सम्बोधन के एकवचन में सु प्रत्यय	स्त्री सु
यू स्त्र्याख्यौ नदी	स्त्रीशब्द की नदीसंज्ञा	
अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः	नदी संज्ञक को ह्रस्व आदेश	स्त्रि सु
एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः	सु का लोप	हे स्त्रि

इति सिद्धम्

स्त्रियौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्त्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन	

	में औ प्रत्यय।	स्त्री औ
स्त्रियाः	ईकार को इयङ् आदेश	स्त्र् इय् औ
	संयुक्त करने पर	स्त्रियौ
		इति सिद्ध

स्त्रियः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्त्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा।	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन	
	में जस् प्रत्यय। अनुबन्धलोप	स्त्री अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	दीर्घ प्राप्त था।	
दीर्घाज्जसि च	इससे निषेध हुआ।	
स्त्रियाः	ईकार को इयङ् आदेश	
	अनुबन्धलोप करने पर	स्त्र् इय् अस्
	संयुक्त करने पर	स्त्रियस्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	स्त्रियर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	स्त्रियः
		इति सिद्ध

स्त्रियम् = स्त्रीम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्त्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के एकवचन	
	में अम् प्रत्यय	स्त्री अम्
अमि पूर्वः	पूर्वरूप प्राप्त था।	
	उससे रोक कर	
वाम्शसोः	विकल्प से स्त्री को	
	इयङ् आदेश। अनुबन्धलोप	स्त्र् इय् अम्
	संयुक्त करने पर	स्त्रियम्
		इति सिद्ध
	विकल्प के अभाव में	स्त्री अम्
अमि पूर्वः	पूर्वरूप हुआ।	स्त्रीम्
		इति रूप

स्त्रियः = स्त्रीः

सूत्र	कार्य	स्थिति

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्त्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्	इत्यादि सूत्र से द्वितीया के बहुवचन में शस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	स्त्री अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था।	
~~उसे रोककर~~	उसे रोककर	
वाम्शसोः	विकल्प से इयङ् आदेश	
	अनुबन्धलोप करने पर	स्त्र् इय् अस्
	संयुक्त करने पर	स्त्रियस्
स-सजुषो रुः	सकार को रुत्व	स्त्रियर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	स्त्रियः
		इति सिद्धम्
	विकल्प के अभाव में	स्त्री अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	स्त्रीस्
स-सजुषो रुः	सकार को रुत्व	स्त्रीर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	स्त्रीः
		इति सिद्धम्

स्त्रिया

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्त्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय। अनुबन्धलोप	स्त्री आ
इको यणचि	यण् प्राप्त था। इसे रोककर	
स्त्रियाः	स्त्री को इयङ् आदेश	
	अनुबन्ध लोप हुआ	स्त्र् इय् आ
		= स्त्रिया इति सिद्धम्

स्त्रियै

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्त्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय। अनुबन्ध लोप	स्त्री ए
यू स्त्र्याख्यौ नदी	स्त्री शब्द की नदी संज्ञा।	

आण्नद्याः	आट् आगम	स्त्री आट् ए
आटश्च	आकार-एकार को ऐकार वृद्धि एकादेश	स्त्री ऐ
इको यणचि	यण् प्राप्त था, उसे रोककर	
स्त्रियाः	इयङ् आदेश	स्त्रिइय् ऐ
	संयुक्त करने पर	स्त्रियै
		इति सिद्धं

स्त्रियः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	स्त्रीशब्द की प्रातिपदिकसंज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	स्त्री अस्
यू स्त्र्याख्यौ नदी	स्त्री शब्द की नदी संज्ञा	
आण्नद्याः	अस् को आट् आगम	स्त्री आ अस्
~~[illegible]~~ अकः सवर्णे दीर्घः	दीर्घ आकार एकादेश	स्त्री आस्

स्त्रियाः	इयङ् आदेश	स्त्रिइय् आस्
	संयुक्त करने पर	स्त्रियास्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	स्त्रियार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	स्त्रियाः
		इति सिद्धं

स्त्रीणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	स्त्री शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ----- इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	स्त्री आम्
यू स्त्र्याख्यौ नदी	स्त्री शब्द की नदी संज्ञा	
ह्रस्वनद्यापो नुट्	आम् को नुट् आगम	स्त्री नाम्
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार आदेश	स्त्रीणाम्
		इति सिद्धं

स्त्रियाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति

स्त्री शब्द की

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं प्रातिपदिक संज्ञा

स्वौजस्...... इत्यादि सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय। स्त्री ङि

यू स्त्र्याख्यौ नदी — स्त्री शब्द की नदी संज्ञा

ङेराम्नद्याम्नीभ्यः — ङि को आम् आदेश — स्त्री आम्

इको यणचि — यण् प्राप्त था, उसे रोककर

स्त्रियाः — इयङ् आदेश — स्त्र् इय् आम्

संयुक्त करने पर — स्त्रियाम् इति सिद्धं

स्त्रीषु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्त्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के बहुवचन में सुप् प्रत्यय	
	अनुबन्ध लोप	स्त्रीसु
आदेशप्रत्यययोः	सकार को षकार आदेश	स्त्रीषु इति सिद्धं

श्रीः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	श्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय। अनुबन्ध लोप	श्री स्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	श्री र्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	श्रीः इति सिद्धं

श्रियौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	श्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	श्री औ
अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ	श्री को इयङ् आदेश	श्रियौ इति सिद्धं

श्रियः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	श्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय, अनुबन्धलोप	श्री अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त था, इसे रोककर	
दीर्घाज्जसि च	इससे निषेध हुआ	
अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ	श्री को इयङ् आदेश	श्रिय् अस्
		श्रियस्
स-सजुषो रुः	सकार को रुत्व	श्रियर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	श्रियः
		इति सिद्ध

हे श्रीः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सम्बोधन के एकवचन में सु प्रत्यय, अनुबन्धलोप	हे श्री स्
स-सजुषो रुः	सकार को रुत्व	हे श्रीर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	हे श्रीः
		इति सिद्ध

श्रियै

सूत्र	कार्य	स्थिति
	श्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.......इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन ङे प्रत्यय,	
	अनुबन्धलोप	श्री ए
ङिति ह्रस्वश्च	विकल्प से नदी संज्ञा	
आण्नद्याः	आट् का आगम	श्री आ ए
आटश्च	वृद्धि एकादेश	श्री ऐ
अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ	इयङ् आदेश	श्रियै इति सिद्ध
	विकल्प के अभाव में	और
अचि श्नु-धातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ	इयङ् आदेश	श्रिये इति सिं

श्रियाः = श्रियः

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	श्री शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.........इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय अनुबन्ध लोप करने पर	श्री अस्
यू स्त्र्याख्यौ नदी	नदी संज्ञा प्राप्त थी	
नेयुवङ्स्थानावस्त्री	इस सूत्र से निषेध हुआ।	श्री अस
ङिति ह्रस्वश्च	विकल्प से नदी संज्ञा	
आण्नद्याः	आट् आगम	श्री आ अस
अकः सवर्णे दीर्घः	सवर्णदीर्घ एकादेश	श्री आस
अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ	इयङ् आदेश	श्रियास
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	श्रियार्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	श्रियाः इति सिद्धम्
	विकल्प के अभाव में	श्री अस्
अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ	इयङ् आदेश	श्रियस्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व आदेश	श्रियर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	श्रियः इति रूपम्

श्रीणाम् = श्रियाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	श्री शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.....इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय	श्री आम
वाऽऽमि	विकल्प से नदी संज्ञा	
आण्नद्याः	आट् आगम	श्री आ आम
अकः सवर्णे दीर्घः	सवर्णदीर्घ एकादेश	श्री आम
अचि श्नु-धातु भ्रुवां य्वोरियङुवङौ	इयङ् आदेश	श्रिय
ह्रस्वनद्यापो नुट्	नुट् आगम	श्री नाम
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार आदेश	श्रीणाम् इति सिद्धम्
	~~श्रियाम्~~ नदी संज्ञा के अभाव में	श्री आम

अचिश्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ इयङ् आदेश श्रियाम्
इति रूप

श्रियि=श्रियाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	श्री शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्..... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय	श्री ङि
ङिति ह्रस्वश्च	विकल्प से नदी संज्ञा	
ङेराम्नद्याम्नीभ्यः	ङि को आम् आदेश	श्री आम्
अचि श्नु धातु भ्रुवां य्वोरियङुवङौ	इयङ् आदेश	श्रियाम् इति सिद्धि
	विकल्प के अभाव में	श्री ङि
लशक्वतद्धिते	ङ् कि इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	श्री इ
अचि श्नु धातु भ्रुवां य्वोरियङुवङौ	इयङ् आदेश	श्रियि इति सिद्धि

क्रोष्ट्री

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	क्रोष्टु शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय, अनुबन्ध लोप	क्रोष्टु स्
स्त्रियां च	स्त्रीवाची क्रोष्टु को तृज्वद्भाव	क्रोष्टृ स्
ऋन्नेभ्यो ङीप्	स्त्रीलिंग में ङीप्, अनुबन्ध लोप	क्रोष्टृ ई स्
इको यणचि	ऋकार को रकादेश	क्रोष्ट्र् ई स् =क्रोष्ट्री स्
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिस्यपृक्तं हल्	सकार का लोप	क्रोष्ट्री इति सिद्धि

भूः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	भू शब्द की	

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं प्रातिपदिक संज्ञा

स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय, अनुबन्धलोप	भू स
स-सजुषो रुः	सकार को रुत्व आदेश	भूर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	भूः इति सिद्ध

स्वसा

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्वसृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	
	अनुबन्धलोप करने पर	स्वसृ स
ऋन्नेभ्यो ङीप्	ङीप् प्राप्त था।	
न षट्स्वस्रादिभ्यः	इस सूत्र से निषेध हुआ।	स्वसृ स्
ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च	अनङ् आदेश। अनुबन्धलोप	स्वसन् स्
अप्तृन्-तृच् .... इत्यादि	सूत्र से उपधा को दीर्घ	स्वसान् स्
हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात् सुतिसि		
संयोगान्तस्य लोपः	सकार का लोप	स्वसान्
नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य	नकार का लोप	स्वसा
		इति सिद्ध

स्वसारौ

सूत्र	कार्य	स्थिति
	स्वसृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	स्वसृ औ
ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः	ऋदन्त अंग को गुणादेश	स्वसर् औ
अप्तृन्-तृच् ...... इत्यादि	सूत्र से उपधा को दीर्घ	स्वसार् औ
		=स्वसारौ इति सिद्ध

मातृः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	मातृ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से द्वितीया के बहुवचन	

	में शस् प्रत्यय। अनुबन्धलोप	मातृ अस्
प्रथमयोः पूर्वसवर्णः	पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश	मातॄस्
स-सजुषो रुः	सकार को रुत्व आदेश	मातॄर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	मातॄः
		इति सिद्धं

द्यौः

	द्यौ शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन	
	में सु प्रत्यय। अनुबन्धलोप	द्यो स्
प्रतो णिदिति वाच्यम्	इस वार्तिक से णिद्भाव	
अचो ञ्णिति	अजन्त अङ्ग को वृद्धि	द्यौस्
स-सजुषो रुः	सकार को रुत्व आदेश	द्यौर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	द्यौः
		इति सिद्धं

इत्यजन्ताः स्त्रीलिङ्गाः

अथाजन्त-नपुंसकलिङ्गाः

ज्ञानम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ज्ञान शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्	इत्यादि सूत्र से प्रथमा के	
	एकवचन में सु प्रत्यय	ज्ञान सु
अतोऽम्	सु को अम् आदेश	ज्ञानम्
		इति सिद्धं

हे ज्ञान

सूत्र	कार्य	स्थिति
	ज्ञान शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
	सम्बोधन के एकवचन	
	में सु प्रत्यय	हे ज्ञान सु
अतोऽम्	सु को अम् आदेश	हे ज्ञान अम्

स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ — स्थानी (सु) के स्थान पर हुआ आदेश (अम्) के समान नहीं है। अतः अकार को ... आदेश हुआ +अम्

एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः

अमि पूर्वः — पूर्वरूप आदेश — हे ज्ञानम्

एङ्ह्रस्वात्सम्बुद्धेः — सम्बुद्धि के हल् का लोप — हे ज्ञान

इति सिद्धः

ज्ञाने

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	ज्ञान शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	ज्ञान औ
वृद्धिरेचि	वृद्धि प्राप्त थी, इसे रोककर	
नपुंसकाच्च	औङ् को शी आदेश	ज्ञान शी
~~स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ~~	~~स्थानी (औ) के स्थान~~	

~~पर हुआ आदेश स्थानी के समान है। औङ्~~

सूत्र	कार्य	स्थिति
लशक्वतद्धिते	श कार की इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	ज्ञान ई
यचि भम्	भसंज्ञा	
यस्येति च	अकार का लोप प्राप्त था	
औङः श्यां प्रतिषेधः	इस वार्तिक से निषेध हुआ	ज्ञान ई
आद्गुणः	गुण करने पर	ज्ञाने

इति सिद्धः

ज्ञानानि

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	ज्ञान शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय।	ज्ञान जस्
जश्शसोः शिः	जस् को शि आदेश	ज्ञान शि
शि सर्वनामस्थानम्	शि की सर्वनामस्थान संज्ञा	
~~स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ~~	~~स्थानी (जस्) के स्थान के स्थान पर हुआ आदेश~~	

~~स्थानी के समान~~ है, अतः

लशक्वतद्धिते — शकार कि इत्संज्ञा
तस्य लोपः — इत्संज्ञक का लोप — ज्ञान इ
नपुंसकस्य झलचः — नुम् आगम
मिदचोऽन्त्यात् परः — समुदाय के अन्त अवयव
अकार के आगे नुम् आगम — ज्ञानन् इ
सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ — उपधा को दीर्घ — ज्ञानान् इ
=ज्ञानानि इति सिद्धं

कतरत् = कतरद्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	कतर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	कतरसु
अद्ड् डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः	सु को अद्ड् आदेश	
	अनुबन्ध लोप करने पर	कतर अद्ड्
टेः	भसंज्ञक टि (अकार) का लोप	कतर् अद्
	संयुक्त करने पर	कतरद्
वाऽवसाने	विकल्प से झल् को चर् आदेश	कतरत्
	विकल्प के अभाव में	कतरद्

इति सिद्धं

कतरे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	कतर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	कतर औ
नपुंसकाच्च	औङ् को शी आदेश	कतर शी
~~स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ~~	~~स्थानी (औ) के स्थान पर हुआ आदेश स्थानी के समान है, अतः~~	
लशक्वतद्धिते	शकार कि इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	कतर ई
यस्येति च	अकार का लोप प्राप्त था	

औङ्गु श्यां प्रतिषेधः इस वार्तिक से अकार लोप निषेध — कतर ई

आद्गुणः — गुण करने पर — कतरे

इति सिद्धि

कतराणि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	कतर शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	कतर जस्
जश्शसोः शिः	जस् को शि आदेश	कतर शि
शि सर्वनामस्थानम्	शि कि सर्वनामस्थान संज्ञा	
लशक्वतद्धिते	शकार कि इत्संज्ञा	
तस्य लोपः	इत्संज्ञक का लोप	कतर ई
नपुंसकस्य झलचः	नुमागम	
मिदचोऽन्त्यात् परः	समुदाय के अन्त्य अवयव अकार को नुमागम	कतरन् ई

सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ	नान्त कि उपधा को दीर्घ	कतरानि
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार आदेश	कतराणि

इति सिद्धि

हे कतरत्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सम्बुद्धि में सु प्रत्यय	कतर सु
अद्ड्डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः	अद्ड् आदेश, अनुबन्ध लोप	कतर अद्
टेः	भसंज्ञक टि का लोप	कतर् अद् = कतरद्
वाऽवसाने	दकार को तकार	हे कतरत्

इति सिद्धि

श्रीपम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	श्रीपा शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य	आकारान्त को ह्रस्व आदेश	श्रीप
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन	

	में सु प्रत्यय	श्रीप सु
अतोऽम्	सु को अम् आदेश	श्रीप अम्
अमि पूर्वः	पूर्वरूप हुआ	श्रीपम्
		इति सिद्धं

वारि

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	वारि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	वारि सु
स्वमोर्नपुंसकात्	सु का लोप	वारि इति सिद्धं

वारिणी

अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	वारि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	वारि औ
नपुंसकाच्च	औङ को शी आदेश	
	अनुबन्ध लोप करने पर	वारि ई
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् का आगम	वारिन् ई
अट् कु प्वाङ् नुम् व्यवायेऽपि	न् को ण् करने पर	वारिणी
		इति सिद्धं

वारीणि

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवद्धातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	वारि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस ...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	वारि जस्
जश्शसोः शिः	जस् को शि आदेश	वारि शि
	अनुबन्ध लोप करने पर	वारि इ
शि सर्वनामस्थानम्	सर्वनामस्थान संज्ञा	
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् का आगम, अनुबन्ध लोप	वारिन् इ
सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ	उपधा को दीर्घ	वारीन् इ
		= वारीनि
अट् कु प्वाङ् नुम् व्यवायेऽपि	नकार को णकार	वारीणि
		इति सिद्धम्

हे वारे, हे वारि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सम्बुद्धि में सु प्रत्यय	हे वारि सु
स्वमोर्नपुंसकात्	सु का लोप	हे वारि
प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्	तदाश्रित गुण कार्य प्राप्त	हे वारि
न लुमताऽङ्गस्य	यह सूत्र नित्य नहीं है।	
	इसकी प्रवृत्ति होने पर	हे वारि
	अभाव में	हे वारे
		इति सिद्धं

वारिणा

सूत्र	कार्य	स्थिति
	वारि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.....इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय।	वारि टा
शेषो घ्यसखि	घि संज्ञा	
आङो नाऽस्त्रियाम्	टा को ना आदेश	वारिना
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार	वारिणा
		इति सिद्धं

वारिणे

सूत्र	कार्य	स्थिति
	वारि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस.....इत्यादि	सूत्र से चतुर्थी के एकवचन में ङे प्रत्यय, अनुबन्धलोप	वारि ए
घेर्ङिति	गुण प्राप्त था	
वृद्ध्यौत्वतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रतिषेधेन	इसे रोक कर नुम् हुआ	वारिन् ए
	संयुक्त करने पर	वारिने
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार	वारिणे
		इति सिद्धं

वारिणः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	वारि शब्द की	

सूत्र	कार्य	स्थिति
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्......इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के एकवचन में	
	ङस् प्रत्यय, अनुबन्ध लोप करने पर	वारि अस्
घेर्ङिति	गुण प्राप्त था, उसे रोककर	
वृद्ध्यौत्वतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुम्	इस वार्तिक से नुम् हुआ	वारिन् अस्
पूर्वविप्रतिषेधेन		= वारिनस्
स-सजुषो रुः	सकार को रुत्व	वारिनर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	वारिनः
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार	वारिणः
		इति सिद्धि

वारिणोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	वारि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में	
	ओस् प्रत्यय	वारि ओस्
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् आगम	वारिनोस्
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार आदेश	वारिणोस्
स-सजुषो रुः	सकार को रुत्व आदेश	वारिणोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	वारिणोः
		इति सिद्धि

वारीणाम्

सूत्र	कार्य	स्थिति
	वारि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.....इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के बहुवचन में आम् प्रत्यय,	वारि आम्
ह्रस्वनद्यापो नुट्	नुट् प्राप्त था उसे रोककर	
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् प्राप्त था, तब	
नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट्	इस वार्तिक से पूर्वविप्रतिषेध	
पूर्वविप्रतिषेधेन	से नुट् हुआ	वारिनाम्
नामि	इकार को दीर्घ आदेश	वारीनाम्
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार आदेश	वारीणाम्
		इति सिद्धि

वारिणि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	वारि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय। अनुबन्धलोप	वारि इ
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् आगम	वारिनि
अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि	नकार को णकार आदेश	वारिणि
		इतिसिद्धं

दध्ना

सूत्र	कार्य	स्थिति
	दधि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन में टा प्रत्यय। अनुबन्धलोप	दधि आ
अस्थि-दधि-सक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः	अनङ् आदेश	दधन् आ
अल्लोपोऽनः	अकार लोप	दध्न् आ

= दध्ना इतिसिद्धं

दध्नः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	दधि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से पञ्चमी के एकवचन में ङसि प्रत्यय अनुबन्धलोप	दधि अस्
अस्थि-दधि-सक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः	अनङ् आदेश	दधन् अस्
अल्लोपोऽनः	अकार लोप	दध्नस्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	दध्नर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	दध्नः
		इतिसिद्धं

दध्नोः

सूत्र	कार्य	स्थिति
	दधि शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ...... इत्यादि	सूत्र से षष्ठी के द्विवचन में	

	ओस् प्रत्यय	दधि ओस्
अस्थि दधिसक्थ्यक्ष्णामनुङुदात्तः	अनङ् आदेश	दध अन् ओस्
अल्लोपोऽनः	अकारलोप	दध्नोस्
ससजुषो रुः	सकार को रुत्व	दध्नोर्
खरवसानयोर्विसर्जनीयः	रेफ को विसर्ग	दध्नोः
		इति सिद्ध

दधिनि, दध्नि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	दधि शब्द कि	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से सप्तमी के एकवचन में ङि प्रत्यय। अनुबन्धलोप	दधि इ
अस्थि-दधिसक्थ्यक्ष्णामनुदात्तः	अनङ् आदेश	दध अन् इ
विभाषा ङिश्योः	इस सूत्र से विकल्प से अकार लोप	दध्नि
		इति सिद्धि
	पक्ष में	दधनि
		इति रूप

अल्लोपोऽनः — इस सूत्र से अ का लोप प्राप्त था। लेकिन

सुधि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सुधी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय।	सुधी सु
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य	ह्रस्व आदेश	सुधि सु
स्वमोर्नपुंसकात्	सु का लोप	सुधि
		इति सिद्धि

सुधिनी

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सुधी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् .... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय।	सुधी औ
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य	ह्रस्व करने पर	सुधि औ
नपुंसकाच्च	औङ् को शी आदेश	
	अनुबन्धलोप करने पर	सुधि ई

इकोऽचि विभक्तौ नुम् का आगम सुधिन् ई = सुधिनी इति सिद्धम्

स्त्री सुधीनि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सुधी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय,	सुधी जस्
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य	ह्रस्व करने पर	सुधि जस्
जश्शसोः शिः	जस् को शि आदेश	
	अनुबन्धलोप हुआ	सुधि इ
शि सर्वनामस्थानम्	सर्वनामस्थान संज्ञा	
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् का आगम	सुधिन् इ
सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ	उपधा को दीर्घ	सुधीनि
		इति सिद्धम्

हे सुधे! हे सुधि!

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सुधी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से सम्बुद्धि में सु प्रत्यय	सुधी सु
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य	ह्रस्व आदेश	सुधि सु
स्वमोर्नपुंसकात्	सु का लोप	सुधि
प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्	तदाश्रित कार्य प्राप्त था	
न लुमताऽङ्गस्य	इस सूत्र की प्रवृत्ति में	हे सुधि
		इति सिद्धम्
	सूत्र की प्रवृत्ति के अभाव में	हे सुधि
ह्रस्वस्य गुणः	गुण आदेश	हे सुधे
		इति रूपं

सुधिया, सुधिना

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सुधी शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस् ..... इत्यादि	सूत्र से तृतीया के एकवचन	

में टा प्रत्यय, अनुबन्धलोप सुधी आ

सूत्र	कार्य	स्थिति
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य	ह्रस्व आदेश	सुधि आ
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् प्राप्त था। उसे रोककर	
तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् गालवस्य	इस सूत्र से विकल्प से पुंवद्भाव हुआ। अतः	
अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियङुवङौ	इयङ् आदेश	सुधि इय् आ
	संयुक्त करने पर	सुधिया इति सिद्धं
	विकल्प के अभाव में	सुधि आ
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् का आगम	सुधिन् आ
		= सुधिना इति रूपं

मधु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	मधु शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	मधु सु
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ह्रस्वकर		
स्वमोर्नपुंसकात्	सु का लोप	मधु इति सिद्धं

मधुनी

सूत्र	कार्य	स्थिति
	मधु शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्..... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	मधु औ
नपुंसकाच्च	औङ् को शी आदेश	मधु शी
	अनुबन्धलोप करने पर	मधु ई
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् का आगम	मधुन् ई
		= मधुनी इति सिद्धं

मधूनि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	मधु शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्...... इत्यादि	सूत्र प्रथमा के बहुवचन	

	में जस् प्रत्यय	मधु जस्
जश्शसोः शिः	जस् को शि आदेश	[illegible]
	अनुबन्ध लोप	मधु इ
शि सर्वनामस्थानम्	सर्वनामस्थान संज्ञा	
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् का आगम	मधुन् इ
सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ	उपधा को दीर्घ	मधूनि इति सिद्धं

सुलु

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सुलु शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के एकवचन में सु प्रत्यय	सुलु सु
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य	ह्रस्व आदेश	सुलु सु
स्वमोर्नपुंसकात्	सु का लोप	सुलु इति सिद्धं

सुलुनी

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सुलु शब्द की	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के द्विवचन में औ प्रत्यय	सुलु औ
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य	ह्रस्वादेश	सुलु औ
नपुंसकाच्च	औङ् को शी आदेश	[illegible]
	अनुबन्ध लोप	सुलु ई
इकोऽचि विभक्तौ	नुम् का आगम	सुलुन् ई
		= सुलुनी इति सिद्धं

सुलूनि

सूत्र	कार्य	स्थिति
	सुलु शब्द कि	
अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं	प्रातिपदिक संज्ञा	
स्वौजस्.... इत्यादि	सूत्र से प्रथमा के बहुवचन में जस् प्रत्यय	सुलु जस्
ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य	ह्रस्वादेश	
जश्शसोः शिः	जस् को शि आदेश	[illegible]
	अनुबन्ध लोप	सुलु इ

X

शि सर्वनामस्थानम् सर्वनामस्थान संज्ञा

इकोऽचि विभक्तौ नुम् का आगम सुलुनि

सर्वनामस्थाने चासम्बुद्धौ उपधा को दीर्घ सुलूनि इति सिद्धं

सुल्वा, सुलुना

सूत्र कार्य स्थिति

सुलु शब्द की

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकं प्रातिपदिक संज्ञा

ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य ह्रस्व आदेश सुलु

स्वौजस ...... इत्यादि सूत्र से तृतीया के

एकवचन में टा प्रत्यय

अनुबन्धलोप सुलु आ

तृतीयादिषु भाषितपुंस्कं पुंवद् विकल्प से पुंवद्भाव

गालवस्य

ओः सुपि यण् आदेश करने पर सुल्वा इति सिद्धं

विकल्प के अभाव में सुलु आ

इकोऽचि विभक्तौ नुम् का आगम सुलुना

इति रूपं

भाइ आप कहाँ गये थे,